॥ श्री गोभ्यः नमः॥

हिन्दी मासिक

कामधेनु-कल्याण

मई-2012

गोधाम महातीर्थ
आनन्दवन पथमेड़ा

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन, पथमेड़ा

वर्षः 6

Web. www. Pathmedagodarshan.org
Email: k.k.p.pathmeda@gmail.com

अंक :11

सुरभी उवाच

श्रीराधा

मेरे प्रिय पुत्रों, स्नेह सहित अनन्त शुभ आशीर्वाद।

आप सभी को जीवन में सेवा, साधना, सत्संग सदा प्राप्त होता रहे, संत सानिध्य से जीवन प्रकाशित होता रहे। पंचगव्य के प्रसाद से जीवन में आरोग्यता व सात्विकता बढ़ती रहे।

एक दिन मेरा एक पुत्र मुझसे पूछ रहा था कि माँ तुम्हारी दिव्य महिमा हम सभी को बताते हैं, समझाते हैं,फिर भी अनेक लोगों के समझ में वो नहीं आती है और वे व्यर्थ के तर्क-वितर्क करा करते हैं। पुत्रों ! ऐसा प्रश्न हो सकता है तुम्हारे मन में भी आता होगा। सुनो मैंने उस पुत्र से क्या कहा? देखो बेटा मेरा मूल स्वभाव नि:स्वार्थता है। बिना किसी लाभ का विचार किए सेवा करते जाना, यही मेरा धर्म है और मैं जीवनभर उसका पालन करती हूँ। मेरा सेवक भले ही मुझे उचित आहार नहीं देता हो, मुझे योग्य स्थान पर नहीं रखता हो, शुद्ध जल भी मुझे नहीं देता हो और मेरे भ्रमण के लिए भी वह कोई व्यवस्था नहीं कर पाता हो तो भी इन सभी प्रतिकूलताओं के बावजूद मैं अपनी पूरी शक्ति सामर्थ्य भर दूध उसे देती हूँ।

हे मेरे पुत्रों ! बस नि:स्वार्थता जिसके हृदय में होगी वो ही मेरी भावनाओं को, मेरी महिमा को समझेगा। तू सिर्फ एक बार मेरी महिमा उसके आगे कहेगा वह सर्वस्व मेरे अर्पण कर देगा। बेटा स्वार्थपरता जिसके जीवन में है, सिर्फ इन्द्रिय सुख सर्व प्रिय है ऐसे लोग मेरी महिमा समझ नहीं पाते। मेरा बाहरी आवरण उन्हें और भ्रमित कर देता है। पुत्र ! तुम बड़े भाग्यशाली हो जो तुम्हें संत और शास्त्रों का सहारा मिला है। इससे तुम मेरी आन्तरिक शक्तियों को जानकर मेरी सेवा, संरक्षण में लगे हो। प्रिय पुत्र ! सत्संग जब समाज में बढ़ेगा, व्यक्ति अपना निजी स्वार्थ छोड़ सभी के कल्याण की कामना करेगा। पंचगव्य का अधिकाधिक उपयोग करेगा तो भगवत कृपा से गोमहिमा अन्त:करण में स्वत: प्रकट हो जायेगी।

प्रिय पुत्रों ! उष्ण काल प्रारम्भ हो गया है। मेरे गोवंश की शुद्ध जल व योग्य चारा, आहार से सेवा करना। मेरे आदि पालक भगवान गोपाल तुम्हारे इस कार्य से बहुत प्रसन्न होंगे। बस बेटा अधिक क्या कहुँ ? सेवा, साधना व सत्संग ये गोसेवा के विशेष फल हैं। तुम्हारे जीवन में ये फल प्रकट हों। तुम बहुत आनन्द से सेवा की राह पर बढ़ते रहो। जीवन को सात्विक व साधनामय, सत्संगमय बनाते रहो, मैं तुम्हारे साथ हूँ।हे मेरे पुत्रों तुम्हारी बागडोर जब तक मेरे हाथ में है तुम निश्चिन्त रहो और गोपाल के प्यारे बनो।

तुम्हारी माँ सुरभी

।। वन्दे धेनुमातरम् ।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्षः6 **dke/ku&dY;k.k** अंकः11

वि.सं. जेष्ठ कृष्ण पक्ष 2069 मई – 2012

अनुक्रमणिका

1. सम्पादकीय 2

2.साधक संजिवनी ❖ *भगवान् के समग्ररूपसम्बन्धी मार्मिक बात–1* 4

3 श्रीकामधेनु कृपा प्रसाद ❖ *परम भागवत **गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी** महाराज के प्रवचन* 5

4. गोभागवत कथा–2010 ❖ *परम पूज्य द्वाराचार्य **श्रीमंहत श्रीराजेन्द्रदासजी** महाराज* 10

5. बालक अंक ❖ *बालक के आहार–विकास का क्रम* 15

6. (गो–कविता) 17

7. **कामधेनु (कहानी)** 18

8. गोसेवा अंक ❖ *गोविन्द की गाय* 20

9. दानमहिमा अंक ❖ *दान–एक विहंगम दृष्टि* 23

10.सत्कथा अंक ❖ *धर्मनिष्ठ सबसे अजेय है* 26

11.संस्था समाचार ❖ *परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के अप्रैल माह के प्रवास का संक्षिप्त विवरणः–* ❖ *आगामी गोसेवार्थ कार्यक्रमों की संक्षिप्त सुचना* 29

12. एक सच्ची घटनाः– गोमाता की ममता 32

13.व्रत पर्वोत्सव अंक ❖ *सांस्कृतिक इकाई के मूल–पर्व एवं त्योहार* 33

14. गोशाला कविता 34

देहस्थितासि रूद्राणि शंकरस्य सदा प्रिया।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु।।

हे रूद्राणी ! तुम भगवान् शंकर को सदा प्यारी हो तथा उनकी आधी देह में स्थित रहती हो। वही देवी गौ के रूप में मेरे पाप का नाश करे।

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज

Web. www.pathmedagodarshan.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

lEikndh; irk

श्रीगोधाम महातीर्थ आनन्दवन–पथमेड़ा,
त.–सांचोर, जि.–जालोर (राज.) 343041
Ph.02979-287102-09
Tel. Fax. 02979-287122

प्रबन्ध व कार्यकारी सम्पादक
पूनम राजपुरोहित ''मानवताधर्मी''
Mob.9414154706

lEiknd
स्वामी ज्ञानानन्द

आजीवन सदस्यता शुल्क–1100 रुपये मात्र

eY;&10 #i;s

भगवान् के समग्ररूप-सम्बन्धी मार्मिक बात

साभारः- साधक संजीवनी

सगुण की ही उपासना करनेवाले पहले सगुण-साकार मानकर उपासना करते हैं। परन्तु मनमें जबतक साकार रूप दृढ़ नहीं होता, तब तक 'प्रभु हैं और वे मेरे सामने हैं' ऐसी मान्यता मुख्य होती है। इस मान्यतामें सगुण भगवान्‌की अभिव्यक्ति जितनी अधिक होती है, उतनी ही उपासना ऊँची मानी जाती है। अन्तमें जब वह सगुण साकाररूपसे भगवान्‌के दर्शन, भाषण, स्पर्श और प्रसाद प्राप्त कर लेता है, तब उसकी उपासनाकी पूर्णता हो जाती है।

निगुर्णकी उपासना करनेवाले परमात्माको सम्पूर्ण संसारमें व्यापक समझते हुए चिन्तन करते हैं। उनकी वृत्ति जितनी ही सूक्ष्म होती चली जाती है, उतनी ही उनकी उपासना ऊँची मानी जाती है। अन्तमें सांसारिक आसक्ति और गुणोंका सर्वथा त्याग होनेपर जब 'मैं', 'तू' आदि कुछ भी नहीं रहता, केवल चिन्मय-तत्व शेष रह जाता है, तब उसकी उपासनाकी पूर्णता हो जाती है।

इस प्रकार दोनोंकी अपनी-अपनी उपासनाकी पूर्णता होनेपर दोनोंकी एकता हो जाती है अर्थात् दोनों एक ही तत्वको प्राप्त हो जाते है। सगुण-साकारके उपासकोंको तो भगवत्कृपासे निर्गुण-निराकार का भी बोध हो जाता है- 'मम दरसन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज सरूपा।। निर्गुण-निराकारके उपासकमें यदि भक्तिके संस्कार हैं और भगवान्‌के दर्शनकी अभिलाषा है, तो उसे भगवान्‌के दर्शन हो जाते हैं अथवा भगवान्‌को उससे कुछ काम लेना होता है, तो भगवान् अपनी तरफसे भी दर्शन दे सकते हैं। जैसे, निर्गुण निराकारके उपासक मधुसूदनाचार्यजीको भगवान्‌ने अपनी तरफसे दर्शन दिये थे।

वास्तवमें परमात्मा सगुण-निर्गुण, साकार-निराकार सब कुछ हैं। सगुण-निर्गुण तो उनके विशेषण हैं, नाम हैं। साधक परमात्माको गुणोंके सहित मानता है तो उसके लिये वे निर्गुण है। वास्तवमें परमात्मा सगुण तथा निर्गुण दोनों है। और दोनों से परे भी है। परन्तु इस वास्तविकताका पता तभी लगता है, भगवान्‌के सौन्दर्य, माधुर्य, ऐश्वर्य औदार्य आदि जो दिव्य गुण हैं, उन गुणोंके सहित सर्वत्र व्यापक परमात्माको 'सगुण' कहते हैं। इस सगुणके दो भेद होते हैं-

(१) सगुण- निराकार- जैसे, आकाशका गुण 'शब्द' है, पर आकाश कोई आकार (आकृति) नहीं है, इसलिये आकाश सगुण-निराकार हुआ। ऐसे ही प्रकृति और प्रकृतिके कार्य संसारमें परिपूर्णयपसे व्यापक परमात्माका नाम सगुण-निराकार है।

(२) सगुण-साकार- वे ही सगणु-निराकार परमात्मा जब अपनी दिव्य प्रकृतिको अधिष्ठित करते अपनी योगमायासे लोगोंके सामने प्रकट हो जाते हैं, उनकी इन्द्रियोंके विषय हो जाते हैं, तब उन परमातमाको सगुण साकार कहते हैं। सगुण तो वे थे ही, आकृतियुक्त प्रकट हो जानेसे वे साकार कहाते हैं। जब साधक परमात्माको दिव्य अलौकिक गुणोंसे भी रहित मानता है आर्थात् साधककी दृष्टि केवल निर्गुण परमात्माकी तरफ रहती है तब परमात्माका वह स्वरूप 'निर्गुण-निराकार' कहा जाता है।

गुणोंके भी दो भेद होते हैं- (१) परमात्माके स्वरूपभूत सौन्दर्य, माधुर्य, ऐश्वर्य आदि दिव्य, अलौकिक, अप्राकृत गुण; और (२) प्रकृतिके सत्व, रज और तमगुण। परमात्मा चाहे सगुण-निराकार हों, चाहे सगुण-साकार हों, वे प्रकृतिके सत्व, रज और तम तीनों गुणोंसे सर्वथा रहित हैं, अतीत हैं। वे यद्यपि प्रकृतिके गुणोंको स्वीकार करके सृष्टिकी उत्पत्ति, स्थिति और प्रलयकी लीला करते हैं, फिर भी वे प्रकृतिके गुणोंसे सर्वथा रहित ही रहते है।

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(टेपांकित वाणी का संकलन)

(गोऋषि परम श्रद्धेय स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

राम, राम, राम, राम, राम, राम

पंच गावः समुत्पन्ना मथ्यमाने महोदधौ।
तासां मध्ये तु या नन्दा तस्यै देव्यै नमो नमः

सत्य सनातन धर्म की जय ! गोमाता की जय ! जगदीश्वर भगवान की जय !

पूज्य संतों के चरणों में वन्दन, पूज्या गोमाता के चरणों में वन्दन, यहाँ पधारे हुए सभी अथितिगण, यहाँ के कार्यक्रमके आयोजक, आस-पास से पधारे हुए सभी धर्मनिष्ठ कर्तव्यपरायण सज्जन बन्धुओं, माताओं, बहिनों-बालकों आप सभी को जय गोमाता, जय गोपाल।

गाय की महत्ता आर्ष गन्थों में और आर्ष पुरूषों के जीवन में यथार्थ रूपसे से हमको देखने और सुनने को मिलती है। गोमाता को मानव सहित सम्पूर्ण सृष्टि का कल्याण करने वाली कल्याणी ''मातर सर्वभूतानाम् भूत भविष्य मातरम्'' अतीत में भी यह सब की माँ थी, आगे भी माँ रहेगी और वर्तमान में भी है। यह समस्त भूतों की माँ है। समष्टि प्राणियों में पृथ्वी को भी गिनते है, जल भी है, वायु भी, अग्नि भी है, यह सब की माँ है। व्यष्टि और समष्टि प्रकृति की माँ है गो। सभी प्राणियों के लिए आशीर्वाद का एक समुद्र है और जीवनी शक्ति और ऊर्जा की किरणों का खजाना है। सतोगुण का सार है। देवत्व का अनुष्ठान है। धर्म की जननी है और प्राकृतिक समृद्धि की मुख्य धुरी है। ऊर्जा और प्रेरणा दोनों एक साथ प्रदान करती है।

मेरे बोलने में आपको थोड़ा लगता होगा। हमें गुजराती भाषा आती नहीं है। यह प्रार्थना करने आया था कि ऐसी पूज्या सर्वहितकारी सबका कल्याण करने वाली गाय और उसके वंश के लिए जिस गांव में, जिस क्षेत्र में, जिस प्रान्त में जो उपाय किये जा रहे हैं, उनके वंश की वृद्धि, उनका संरक्षण, उनका संवर्धन उस हेतु जो जहाँ भी प्रयास किये जा रहे है, वहाँ हम जायेंगे। वह भूमि, वह गांव, वह ग्वाले सभी धनी हैं।

तो गाय धर्म को जन्म देने वाली है। मनुष्य तो धर्म को धारण करता है और गाय धर्म की जननी है। गाय परहित की प्रतिमा है। यह अपनी श्वास से, गोबर से, गोमूत्र से, उनके पाँवों से स्पर्श होने वाले रज से और दूध आदि से सम्पूर्ण सृष्टि का हित कर रही है। सम्पूर्ण सृष्टि में ऐसा कोई प्राणी नहीं है जिसका गो के द्वारा हित न होता है। सबका हित होता है। उनके स्पर्श होकर जब पवन चलता है तो वह पवन जीवनी शक्ति से युक्त हो जाता है। वृक्षों में, पशुओं में, पक्षियों में, मनुष्यों में, देवताओं में जहाँ भी वह पवन जायेगा, अपनी जीवनी शक्ति का प्रसार करता जायेगा। इस तरह गाय की जो श्वास है वह निरंजन है। उसमें भी जीवनी शक्ति (ऑक्सीजन) उससे भरा हुआ है। वह श्वास ऑक्सीजन को शुद्ध करता है। आप कभी बैठी गाय के सामने बैठ जाओ, गाय के मुख से जो श्वास आपके श्वास से मिलेगी तो आपको स्फूर्ति की अनुभुति होगी। दूसरे किसी प्राणी, चाहे मनुष्य ही क्यों न हो उसके सामने बैठो तो घबराट होगी।

गाय जो गव्य देती है पंचगव्य जिसे

हम कहते हैं, यह दिव्य अमृत है। देवताओं के लिए भी, मनुष्यों के लिए भी, दैत्यों के लिए भी और इस धरा के लिए भी। हमारे पूर्वज इस पृथ्वी से करोड़ों वर्षों से उत्पादन करते आये हैं, अन्न, फल, सब्जियाँ माने हमारी कृषि करोड़ों वर्षों पुरानी है। करोड़ों वर्षों से हम खेती करते आ रहे हैं फिर भी यह हमारी भूमि ऊर्जा से युक्त है, जीवनी शक्ति से युक्त है और हमें उत्पादन देती जा रही है। इसके पीछे कोई गहरा रहस्यपूर्ण कारण है तो वह है गोमाता, उसके द्वारा निस्पादित गोबर और गोमूत्र।

यह गोबर और गोमूत्र धरती की भूख को मिटाते हैं, उसे जीवनी शक्ति देते हैं और निरन्तर उसको जवान बनाये रखते हैं, युवा बनाये रखते हैं। हमारी पृथ्वी वृद्ध नहीं हुई है उसके पीछे गो ही है। जिन राष्ट्रों ने, जिन वर्गों ने, सभ्यताओं ने फर्टिलाईजर और ऐसे अन्य जो विषयुक्त रसायन है उनका प्रयोग किया खेती में, वहाँ की खेती नष्ट हो गई। ३००-४०० वर्षों में उनकी खेती जलकर राख हो रही है। यह बहुत बड़ा एक ऐतिहासिक प्रमाण है हमारे सामने। भारत वर्ष की यह धरती करोड़ों वर्षों से हमें निरन्तर उत्पादन दे रही है फिर भी बदली नहीं और पिछले ५० सालों में हम यहाँ पर रासायनिक खाद लाये, हमारी भूमि भी वैसी ही होने लग गई। तो सज्जनों ! गाय गोमय देती है पृथ्वी को, ऐसे तो दूसरे भी पशु अपना-अपना मल तो देते ही हैं, मानव भी मल छोड़ता है और पशु भी जैसे भैंस, बकरी, ऊंट सभी मल तो छोड़ते हैं तो सभी मल देते, मूत्र देते हैं। यदि मल मूत्र से पृथ्वी का पोषण होता हो तो उन सबके मल-मूत्र से हो जाये। गाय की वहाँ क्यों बात होती है? गाय की इतनी महत्ता क्यों? इस कारण ही हम गोरक्षा की और गो की महता की, उपादेयता की बात करते हैं। यह गो है।

धन्य हमारी दृष्टि, हमारा दर्शन और हमारी संस्कृति, गुणवत्ता को महत्व देती है मात्रा को नहीं, संख्या को नहीं। गुणवत्ता को, विवेक को महत्व देती है भीड़ को नहीं। बहुत मात्रा में गोबर छोड़ दें, मल छोड़ दें उससे हो सकता है, आपका उत्पादन भी हो जायेगा। अन्न गेहूँ, चावल आदि पर उनमें सात्विकता नहीं होगी। वह आपके शरीर का सात्विक विकास नहीं कर पायेगा, आपके हृदय को पवित्र नहीं कर पायेगा। आपकी बुद्धि को विवेकवती नहीं बनायेगा। यह गुण गाय के गोबर में है। गाय का गोबर मल को मिटाने वाला होने से उसके अन्दर मल शोधक और विष शमन की अद्‌भुत शक्ति है। मल शोधक, विष शमनक और जीवन शक्ति को पोषण करने वाली ये तीनों शक्तियाँ गाय के गोबर में मौजूद हैं।

जीवनी शक्ति तो अभक्ष्य-भक्षण खाने से भी मिल जाती है। अण्डा, मांस खाकर भी आदमी चौड़ा हो जाता है। भैंस का दूध पीकर भी चौड़ा हो जाता है पर उसे जीवन नहीं कहते हैं। जीवन उसको कहते हैं जिसमें मृत्यु न हो। मृत्यु हो जो मरता हो, जो बदलता हो, उत्पन्न होता है, बनता और नष्ट होता, उसको जीवन नहीं कहते। सज्जनों ! मनुष्य एक बहुत बड़ी भूल कर लेता है और उस भूल से उनके साथ बहुत बड़ा धोखा हो जाता है। यह जो उठना, बैठना, चलना, फिरना आदि क्रियाएँ हैं इनको जीवन मानते हैं। यह जीवन नहीं है। ये शरीर व शरीर के द्वारा होने वाली क्रिया जीवन नहीं है। ये जीवन को प्राप्त करने के साधन हैं। ये साधन है जीवन नहीं हैं। जो साध्य है वह जीवन है। चलने की

शक्ति, जानने की शक्ति और मानने की शक्ति, जहाँ बोल रहे हैं, बोलना भी चलने में आता हैं और पाँवों से चलना फिरना यह सब चलने में आता है। मानते हैं ना कि यह देवता है, यह गोमाता है, ये मेरे पिता हैं, मैं हिन्दू हूँ, मेरा देश भारत है यह मानने की शक्ति है और जानने की चीज यहाँ ठण्डी, गर्मी है तो बाहरी विवेक है ना वो जानने की शक्ति है।

तो जानने की शक्ति, करने की शक्ति और यह मानने की शक्ति ये तीनों शक्तियाँ ईश्वर ने हमको जीवन प्राप्ति के लिए साधन के रूप में दी हैं। जीवन उसका नाम है जो नष्ट न हो, जो उत्पन्न और नष्ट न होता हो उसका नाम जीवन है। वह अविनाशी है। जीवन का अर्थ ही अविनाशी है। नाशवान को जीवन कैसे कहेंगे। अविनाशी जीवन की उपलब्धी गोमाता के माध्यम से मानव जाति को मिल सकती है।

इसलिए हमारे पूर्वजों ने गाय को सर्वोपरि प्राणी, दिव्य प्राणी, ब्रह्माण्ड के विष का शमन करने वाला और ब्रह्माण्ड को अमृत दान देने वाला एक दिव्य यंत्र के रूप में अपनी वस्तुओं में, साहित्यों में स्थापित किया। गोबर से, गोमूत्र से, दही से, दूध से और घी से सृष्टि को और विशेषकर मानव को जो लाभ होता है, वह अदभुत लाभ है। आर्थिक दृष्टि से तो हमें यह सब कुछ देती ही है। सात्विक समृद्धि, शारीरिक दृष्टि से यह निरोगता प्रदान करती है और गाय पर्यावरण की दृष्टि से यह हमें शुद्धता प्रदान करती है। प्राकृतिक सन्तुलन की दृष्टि से गाय सन्तुलन स्थापित करती है और संस्कृति की दृष्टि से हमारे चित्त को गाय के माध्यम से संस्कार मिलता है। गाय के द्वारा धर्म की दृष्टि से परमार्थ, परहित ही होता है।

अध्यात्म की दृष्टि से दर्शन मात्र से गाय हमें उस सत्य की शांत, अखण्ड, परम सत्य जो है जिससे अभी-अभी हमने जीवन के रूपमें कहा, उस तक पहुँचने का एक संकेत करती है। आपने देखा होगा कि गाय की पलकें बहुत कम गिरती हैं, बहुत कम गिरती हैं। गाय अधिकतर समाधि में रहती है। निर्विकल्प अवस्था रहती है। बहुत कम पलक गाय के हाँ कोई विक्षेप पैदा हो गया या बचपन से उसके साथ कोई पड़ताड़ना हुई हो तो बात अलग है बाकि अधिकतर गायें सहज और सामान्य रहती हैं। जुगाली करती हैं तो भी समाधि लगाये हुए, चलती हैं तो भी समाधि लगाये हुए, गाय हमेशा समाधि में रहती है। जो स्वयं जैसा होता है, वैसा ही वह उसके सेवक को देता है। गाय जैसे सात्विक है, पवित्र है, परमार्थ का पूँज है तो उनकी सेवा करने वाला, उनका सान्निध्य प्राप्त करने वाला और उनके दूध, दही, घी का सेवन करने वाला, उनके गोबर की खाद से उत्पन्न होने वाला अन्न-फल औषधि का आहार लेने वाला समाज, व्यक्ति, राष्ट्र पवित्र, सात्विक सत्य तक पहुँच जाता है। ये सार बातें हैं। यह परमसार और अति पवित्र बातें हैं।

इस सृष्टि चक्र को दीर्घकाल तक चलाने के लिए एक ऐसी व्यवस्था की आवश्कता है जिससे समस्त प्राणियों के जीवन जीने के अधिकारों की रक्षा हो और गोपालन सभ्यता के माध्यम से समस्त प्राणियों के अधिकारों की रक्षा होती है। जो मूल अधिकार जीवन जीने का, वह सभी प्राणियों को है। इस पृथ्वी पर छोटा-बड़ा पिण्डदान करने वाले जितने भी प्राणी हैं, उन सभी को जीवन जीने का अधिकार है और उनका जीवन जीने का अधिकार सुरक्षित होते ही अगर मानव उनके अधिकारों का हनन करे तो उस मानव को

आप क्या कहेंगे? उस मनुष्य की क्या संज्ञा होगी। वो इस पृथ्वी का भंयकर दानव होगा। क्यों? क्योंकि मनुष्य को रचियता ने इस सृष्टि के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए ही बनाया था। ईश्वर ने यह समस्त प्राणी जगत मनुष्य के लिए बनाया और मनुष्य को प्रभु ने अपने लिये बनाया। अपने प्रतिनिधि के रूप में भेजा था उसको मानव बनाकर और उनकी बनायी हुई लीला, उनका बनाया हुआ यह विश्वरूपी बाग उसकी रक्षा के लिए, उसके वर्धन के लिए, उसके पोषण के लिए मानव की रचना की है। वह जिसने सृष्टि रची है उसके रचना के पीछे जो उद्देश्य है वो यह है कि सभी सुखी रहे, सभी को आनन्द मिले, सबका कल्याण हो और यह कार्य कब होगा? यह उनका कोई ईमानदार प्रतिनिधि आकर करेगा तभी तो होगा।

जैसे यह संस्था बन रही है तो इस संस्था के ट्रस्टी जो इसको बनाने वाले कार्यकर्ता हैं, इसको बनाने वाले वो सब यह नहीं कर पायेंगे पर उनके प्रतिनिधि के तौर पर एक विश्वासप्रात्र व्यवस्थापक रहेगा, एक मैंनेजर रहेगा, उसके द्वारा इस संस्था का संचालन होगा। एक विश्वासपात्र व्यक्ति गोशाला में इसलिए रखा जायेगा कि वह इस ट्रस्ट के उददे्श्यों को पूरा करें। ट्रस्ट का उद्देश्य गोवंश का संरक्षण है और गो का संवर्धन है। इन उद्देश्यों को पूरा करने में जो सहायक बनेगा पूर्णरूप से वो उनका प्रतिनिधि होगा, वह प्रबन्धक होगा गोशाला का। वह व्यवस्थापक इस उद्देश्य के विपरीत गायों को दुःख पहुँचाये, गायों की नस्ल बिगाड़े और गायों के प्रति लोगों में अश्रद्धा उत्पन्न करे या गायों के लिए जो सामान आ रहा है उस सामान को गाय तक नहीं पहुँचाये, चारा समय पर न दे, पानी समय पर न दे तो वह व्यवस्थापक कैसे, वह ट्रस्ट का विश्वासप्रात्र कैसे रहेगा। वह नहीं रह सकता। ऐसे ही मनुष्य इस संसाररूपी गोशाला का व्यवस्थापक है। यह भगवान की गोशाला है और मनुष्य इसका व्यवस्थापक है। इनमें वृक्षों का, जैसे अभी भाई साहब बोल रहे थे कि भाई पर्यावरण, वनस्पति और अन्यान्य छोटे-बड़े पशु-पशी ये सब सृष्टि संतुलन के लिए सृष्टि के रचियता ने रचे हैं। अगर इनकी आवश्यकता न होती तो वह रचता ही क्यों? इसलिए सभी की अपने-अपने स्थान पर आवश्यकता है। यहाँ कुछ ऐसी चींजे हैं, जो मनुष्य की भूल से उत्पन्न हो जाती है। उसे मानवीय अपराध कहते हैं। उनको नष्ट करना सार्थक है। जैसे ये कांटे हैं, ये कांटे जो हैं इस क्षेत्र में आये, यह गोपाल कृष्ण का गोपाल क्षेत्र है।

यहाँ आप हम बैठे हैं यहाँ पर भगवान श्रीकृष्ण आज से ५१०० सौ वर्ष पूर्व गोकुल से, वृन्दावन से लाखों गायें लाये थे। यहाँ पर द्वारिका की स्थापना की और प्रतिदिन लाखों गायें दान करने वाले व्यक्ति के पास, राजा के पास कितनी गायें होगी और वह कितने क्षेत्र में रहती होगी। करोड़ों गोवंश यमुना से लेकर, इधर यह सिन्ध और उधर समुद्र पश्चिम में और दक्षिण में नर्मदा इसके बीचका जो यह क्षेत्र है यह पूरा का पूरा गोचारण क्षेत्र है। यह भगवान राम के द्वारा अपने पिता दशरथ के पीछे छोड़ा हुआ गोचर है। इसी गोचर में ५००० वर्ष पूर्व भगवान श्रीकृष्णने अवतार में आकर के गोपालन लोक संस्कृति की स्थापना की। यह वही भूमि है और यह जो आप सब बैठे हैं, वो भी वो ही है। इस रूप में नहीं थे, यह शरीर नहीं था पर हम थे। आप हम सब

मौजूद थे उस समय भी ५००० वर्ष जब गोपालन लोक संस्कृति का एक दिव्य आन्दोलन चला भारत वर्ष में। पर गोपालन संस्कृति के विरोधी प्रशासन का, व्यवस्थाओं का, सारों का नाश हुआ तो उस समय हम लोग थे और उसके पहले भी थे। क्योंकि हम सब सृष्टि के आदिकाल से चले आ रहे हैं। मुक्त हुए होते तो जन्म कैसे होता है? जन्म होता ही नहीं तो हम सब चले आ रहे हैं। हम उस समय भी नहीं समझे और आज भी अब भी नहीं समझेंगे तो बहुत बड़ा धोखा हो जायेगा।

भगवान श्रीकृष्ण के समय से लेकर आज तक ५००० वर्ष हो गये। उन्होंने किसी उद्देश्य से गाय को इतना महत्व दिया। गाय के पीछे-पीछे घूमे और ग्वालों के घर में जाकर अवतार लिया। वो चाहते तो संसार के सम्राट के घर अवतार लेते ग्वाले के घर क्यों लेते? ग्वाले के घर आने से तो वहाँ के राजा भी उनको मानते थे। सीधा सम्राट के घर जन्म लेते तो पूरी की पूरी सृष्टि के ऊपर व्यवस्था जो करना चाहता वो तत्काल हो सकती थी, काम भी जल्दी हो जाता। फिर उन्होंने वहाँ जन्म क्यों लिया? सम्राट का एक अंहकार होता है, उसका स्वार्थ होता है। अंहकार व स्वार्थी से मानव को कोई दिशा नहीं मिलती, सृष्टि का कोई हित नहीं होता। इसलिए उन्होंने कहीं सम्राट के घर जन्म नहीं लिया, ग्वाले के घर जाकर जन्म लिया। वहाँ जाकर पले और गोचारण किया। गोपालन की सारी की सारी विद्या उन्होंने उस महाभारतकाल में स्थापित की। उस समय जितने भी राजा थे उन राजाओं का अपना क्षेत्र होता था। उस क्षेत्र में इतना क्षेत्र चारागाह रहेगा, इतनी भूमि बोई जायेगी, इतनी गोविचरण के लिए रहेगी, इतना जल संग्रह के लिए रहेगा, इतनी आबादी के लिये रहेगी, इस तरह के सारे नियम और इस तरह की सारी व्यवस्थाएँ और फिर पूरा का पूरा कामधेनु विज्ञान। गाय से पूरे संसार में गव्य, बैल और अन्न जैसे दाले, गेहूँ, फल ये सारे के सारे मिलते थे। पूरे संसार में आप देखेंगे, जहाँ-जहाँ गायें थी विशेष रूप से, समुद्र के किनारे आप और हम बैठे हैं यहाँ से लेकर वहाँ तक यह भारत वर्ष का कोना पूरे संसार से सुन्दर दिखा। संसार में यह क्षेत्र सबसे समृद्ध था और वह गो के कारण था। जितने सारे आक्रमण हुए हूणों के, यवनों के, शकों के और इसके बाद में इस्लाम के, ये सारे आक्रमण इसी क्षेत्र में हुए और यह सारी समृद्धि को नष्ट करते-करते ३५०० वर्ष पहले ये आक्रमण चलते-चलते १४०० तक चलते रहे उसके बाद फिर इधर के लोग आये ईसाई। ये सारे के सारे प्रारम्भिक आक्रमण हुए। क्योंकि यह सबसे बड़ा समृद्ध क्षेत्र था। इधर तो मालवा और उधर काठियावाड़ ये दोनों इसी समृद्धि के लिए प्रसिद्ध थे और यह कच्छ और थल गायों के चरने के लिए थे।

देखिये भूमि का कैसा वर्गीकरण था और फिर अलग-अलग नस्ल की गायें। पहाड़ों में हमारी कौनसी नस्ल रहेगी, मैदान में कौनसी रहेगी भारत में १०८ नस्लें सर्वोच्च नस्लें थी। उसमें से सबसे उत्तम आठ नस्लें हैं। जिसमें गीर, कांकरेज, थार, साहीवाल, राठी, सांचौरी और अंगोल, ये आठों नस्लें हमारे यहाँ मुख्य थी। ब्रज से लेकर भुज तक आज भी उनका वंश विराजमान है। यह दुनिया की सर्वोत्तम नस्लें हैं। ये दुग्ध की मात्रा में भी बहुत अच्छी हैं। इन्हीं गायों में से इनकी पूर्वज कामधेनु जो दिन भर दूध देने वाली थी। जमदग्नि ऋषि के वहाँ ये गायें रही। जमदग्नि की ..क्रमशः

श्री गोभागवत कथा

कथा व्यास

परम पूज्य द्वाराचार्य महंत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज

पिछले अंक से आगे...भगवान कह रहे हैं- **''गोब्राह्मणहितार्थाय देशस्य च हिताय च। तव चैवाप्रमेयस्य वचनं कर्तुमुद्यतः।।''** हे गुरुदेव महर्षि विश्वामित्र! गाय के हित के लिए भगवान ने सबसे पहले गाय का नाम लिया, गोरक्षा के लिए, गोपालन के लिए, ब्राह्मणों के हित के लिए, इन ऋषि-मुनि, संत-महात्माओं के कल्याण के लिए और **'देशस्य च हिताय च'।** यहाँ यही बड़ा कर्म है, कर्म यह निर्देश कर रहा है कि गाय की रक्षा हुए बिना, गाय की सेवा हुए बिना, गाय का हित हुए बिना ब्राह्मण का हित सम्भव नहीं है।

ब्राह्मण जाति तो है अभी भारत वर्ष में पर उस ब्राह्मण जाति में ब्रह्मत्व कितने लोगों में प्रकट है। आज शर्माजी ऐसे कुछ उदाहरण प्रातः काल दे रहे थे' हम उन नामों को इस मंच से नहीं लेना चाहते, यह मंच बहुत पवित्र मंच है। जिसको लोग पंडित विशेषण लगाते थे, जो देश का प्रथम प्रधानमंत्री था वह और एक ब्राह्मण एक साथ बैठकर के अभक्ष्य भक्षण करते हुए देखे गये और उसको वे एक बहुत बड़ी उपलब्धि मानते हैं। यह एक उदाहरण है। सत्य उदाहरण दे रहे थे। देखो धर्मसम्राट श्रीकरपात्रीजी महाराज कहते थे कि हमें भीड़ की जरूरत नहीं है। लोगों को उनकी बात समझमें नहीं आती थी, लेकिन समझना चाहिए। वे कहते थे कि एक ब्राह्मण, एक सच्चा हिन्दू, एक सच्चा सनातनी वो धर्म की रक्षा करेगा और ये जो दम्भी हैं, जो वर्णाश्राम धर्म के विरोधी हैं ऐसे बड़ी से बड़ी भीड़ भी सनातन धर्म की, संस्कृति की रक्षा करने में समर्थ नहीं है। एक व्यक्ति में धर्म की सुरक्षा हो जाये तो हम समझेंगे कि धर्म की रक्षा हो गई। हमें विचार करना पड़ेगा।

इतने लम्बे समय तक मलेच्छों का शासन इस देश पर रहा, चाहे वे गौरे मलेच्छ हो अथवा उनके पूर्ववृति मलेच्छ सब मलेच्छ ही तो थे। उन सबका शासन रहा। लेकिन उस काल में भी और कितने ब्राह्मण मौत के घाट उतारे गये। सुना जाता है कि गाड़ी-गाड़ी यज्ञोपवित जलाये गये, धर्मग्रन्थों की होलियाँ जलायी गयी, लेकिन बहुत बड़े आश्चर्य की बात है कि उस समय ब्रह्मत्व नष्ट नहीं हुआ। जाति का संहार हुआ पर ब्राह्मणों का जो ब्रह्मत्व है वह समाप्त नहीं हुआ। उनके संस्कार शिथिल नहीं हुए। कोई दुर्भाग्य से छिट गया हो उनकी बात छोड़ो। बहुसंख्यक ब्राह्मण समाज में उनका सदाचार, उनके संस्कार, उनके आचार-विचार वे पूरी तरह सुरक्षित रहे। उसका कारण क्या था? उसका एक मात्र कारण था गाय।

जब तक गाय सुरक्षित रही तब तक विप्रत्व सुरक्षित रहा। जितना गाय का क्षरण हुआ उतना ही ब्राह्मण का नाश हुआ और जैसे ब्राह्मण का नाश हुआ उसके साथ साधु का भी नाश हो गया। साधु के नाश का तात्पर्य है साधुता के अंश का नाश। गाय की रक्षा से ब्राह्मण की रक्षा होगी। ब्राह्मणों का कुल और धेनुओं का कुल दोनों एक ही कुल है। **''कुल ऐकम् विधाक्रुतम्''** एक ही कुल के दो भाग हैं। एक भाग का नाम गाय और दूसरे भाग का नाम ब्राह्मण। एक में ब्रह्माजी ने मन्त्रों की प्रतिष्ठा की और एक में हव्य और कव्य की प्रतिष्ठा की। गाय में हव्य और कव्य की प्रतिष्ठा की और ब्राह्मण में मन्त्र की प्रतिष्ठा की। वैदिक कर्मकाण्ड का मूल स्त्रोत आधार गाय है। गाय के बिना वैदिक कृत्य सम्भव

नहीं हैं। सबसे पहले **'गोमयनोपलिप्तं'** गोबर से लिपो, पंचगव्य प्रसंग की प्रथम विधि है। आचार्य और यजमान दोनों पंचगव्य प्रसंग करे। कहाँ तक कहें यज्ञ संभार को, साकल्य को, संध्या को भी, पंचगव्य से प्रोक्षण की विधि, जप माला को भी पंचगव्य से प्रोक्षण की विधि है। बिना गाय के, १६ संस्कारों में से कोई भी संस्कार सम्भव नहीं है और किसी भी प्रकार का वैदिक कृत्य भी बिना गाय के और गव्य पदार्थों के सम्भव नहीं है। जब गाय नष्ट हो जायेगी तो क्रिया नष्ट हो जायेगी। इसलिये गाय के नष्ट होने से ही ब्रह्मत्व नष्ट हुआ है और यदि गाय सुरक्षित हो जाये तो आप विश्वास करें उसी समय ब्राह्मण सुरक्षित हो जायेगा।

जिस दिन इस देश में भगवत् कृपा से (हम तो भगवान से प्रार्थना करते हैं कि जल्दी से जल्दी यह कार्य हो जाये) कठोर कानून बन जायेगा कि गोवधकारी को तत्क्षण मृत्युदण्ड दे दिया जाये, उसके ऊपर विचार न किया जाये, एक भी गाय भारत में कष्ट में न रहे, गाय सुखी हो जाये, गायों का भाग गायों को प्राप्त हो जाये तो उस दिन से गोरक्षा इस देश में होने लग जायेगी। गोरक्षा के प्रति सम्पूर्ण राष्ट्र कटिबद्ध हो जायेगा। हमें विश्वास है 'उस दिन सभी ब्राह्मण कुमारों के यज्ञोपवित संस्कार सही समय पर होने लग जायेंगे। फिर धीरे-धीरे तो उस युग की शुरूआत होगी जहाँ ब्राह्मण पत्नियों के, ऋषि पत्नियों के गर्भरत बालक गर्भ में ही वेद मन्त्र का पाठ करेंगे।

महाभारत में एक प्रसंग है महाराज! कि जब कल्मास पाद् जो श्राप से असुर हो गये थे (वे राक्षसी भाव को वसिष्ठजी के श्राप से प्राप्त हो गये थे) तो विश्वामित्र के द्वारा प्रेरित होकर असुर भाव से युक्त उस राजा ने वसिष्ठ पुत्रों को भक्षण कर लिया। वसिष्ठजी बड़े दुःखी हो गये कि हमारा वंश नष्ट हो गया। अब हम जीवित ही क्यों रहे? तो वसिष्ठजी ने विचार किया क्या करें आत्महत्या तो करना ठीक नहीं है। तो सोचा कि हिमालय में जाकर पिघल जायें। तो हिमालय की ओर वसिष्ठजी चल पड़े। तो सहसा उन्होंने सुना कि कहीं से बड़ी सुन्दर वेद मन्त्रों की ध्वनि आ रही है। मुड़कर देखा तो एक नारी पीछे से आ रही थी, कहा- देवी तुम कौन हो? वेद मन्त्रों की ध्वनि कहाँ से आ रही है? उस देवी ने कहा कि भगवन् मैं आपके पुत्र महर्षि शक्ति की पत्नी हूँ। आपकी पुत्र वधु। मेरे गर्भ में आपका वंश बीज सुरक्षित है वो ही वेद अनुष्ठान कर रहा है। महाराज! क्या कहें, सुनते ही वसिष्ठजी के नैत्र भर आये और बोले चलो हमारा गौत्र सुरक्षित है। फिर उन्होंने हिमालय जाकर पिघलने का विचार छोड़ दिया। वही शक्ति के पुत्र महर्षि पराशर हुए और उन्हीं पराशर के पुत्र भगवान वेदव्यास हुए।

जिस दिन गाय की रक्षा होने लग जायेगी। निश्चित है इस पवित्र भारत वर्ष में उस दिन विप्रत्व सुरक्षित हो जायेगा, ब्रह्मत्व सुरक्षित हो जायेगा और जब विप्रत्व सुरक्षित हो जायेगा तो क्षत्रियत्व भी सुरक्षित हो जायेगा परिष्कृत हो जायेगा। ब्राह्मण के विकृत होने से ही सारा समाज विकृत होता है। युग निर्माता ब्राह्मण है। ब्राह्मण विकृत हो जायेगा तो क्षत्रिय विकृत हो जायेगा। क्षत्रिय ही विकृत हो जायेगा तो वैश्य विकृत हो जायेगा और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के विकृत होने से चतुर्थ वर्ण भी विकृत हो जायेगा। ब्राह्मण विकृत होता है गाय की हिंसा से। गाय के नष्ट होने से विप्रत्व नष्ट हो रहा है। गाय की चर्बी का जिनमें मिश्रण है अथवा गाय के शरीर का अंश जिसमें मिश्रित है ऐसी दवाईयाँ, चॉकलेट आदि अथवा बाजारों का घी और वह

सब धल्लड़े से खाये जा रहे हैं तो अब बतायें गाय की चर्बी या गाय के शरीर का कोई अंश जिनके पेट में किसी प्रकार से चला गया उनके चित्त में गाय के प्रति श्रद्धा कैसे होगी। ब्राह्मण के प्रति श्रद्धा कैसे होगी, सनातन धर्म के प्रति श्रद्धा कैसे होगी, शास्त्र और पुराण के प्रति श्रद्धा कैसे होगी। नहीं हो सकती। हमारी बात कोई मानेगा नहीं इसलिए इस बात का हमें भी विश्वास है। पर माने या ना माने कह तो सकते हैं ही। कहने की स्वतन्त्रता है हमको। हम अपनी बात कह सकते हैं, निवेदन कर सकते हैं आप लोगों के चरणों में।

पवित्र गव्य पदार्थों के अभाव में आप कोई भी उत्सव महोत्सव न करें तो कोई हानि नहीं है। भगवान बिल्कुल नाराज नहीं होंगे, आचार्य नाराज नहीं होंगे, संत नाराज नहीं होंगे, गुरुजन नाराज नहीं होंगे। आप भगवान के नाम पर, आचार्य के नाम पर, गुरुके नाम पर, कुँभ के नाम पर और बड़े-बड़े भोजन-भण्डारों के नाम पर, यज्ञ के नाम पर यदि लोगों को अशुद्ध पदार्थ खिला रहे हैं तो उनसे न तो देवता सन्तुष्ट होंगे, न भगवान सन्तुष्ट होंगे, ना पूर्वज सन्तुष्ट होंगे और ना ही पित्रगण सन्तुष्ट होंगे। हाँ हम प्रतिष्ठा सूत्री निष्ठा का संचय करके लोकमान्यता भले ही अर्जित करलें, इतने लोगों को भोजन कराया, इतना बड़ा भण्डारा हुआ, इस प्रकार भले ही अपने अहंकार का पोषण कर सकते हैं। झूठी वाही-वाही लूट सकते हैं। लेकिन यथार्थ में कल्याण का सम्पादन नहीं हो सकता। वैदिक सिद्धान्त है आहार की शुद्धि से अन्तःकरण की शुद्धि। अत्यन्त प्रगाढ़ आहार शुद्ध होगा तो अन्तःकरण शुद्ध होगा। बहुत अच्छा है रूखी, सुखी जैसी है, ठाकुरजी को प्रेम से दाल रोटी का भोग लगाओ, कीर्तन करो उसी में ठाकुरजी प्रसन्न हो जायेंगे। सेठ साहुकारों से भी हमारा निवेदन है कि यदि आपको भण्डारा करने की इच्छा है तो वृन्दावन, चित्रकूट में जाकर केवल दालभात खिला दो तो काई बात नहीं है। दक्षिणा दे दो महात्मा प्रसन्न हो जायेंगे। तुम चाहो ५६ भोग पकाओ, दक्षिणा नहीं दो तो प्रसन्नता प्राप्त नहीं कर पाओगे। प्रसन्नता प्राप्त करना ही तो लक्ष्य है। लेकिन शुद्ध गव्य पदार्थ नहीं मिलते हैं तो आप उत्सव-महोत्सव के नाम पर भी अपवित्र पदार्थों को मत खिलाइये। अपवित्र पदार्थों को खिलानेसे ना आपको लाभ होगा और ना ही खानेवालों को।

हमारे पूज्यश्री खाकचौक वाले महाराज जी कहा करते थे कि लड्डू की मार में सब भजन चौपट कर देते हैं। कहते थे कि वृन्दावन खाकचौक में हमारी महंताई सन् १९३२ में हुई, महाराजजी कहते थे सन् १९३२ में हम इस स्थान पर अभिषिक्त हुए। बोले १९३२ हमें इसलिये याद रहता है कि सन् ३२ में हमारी महंताई भी हुई और अखाड़े-द्वारे जितने विरक्त संतों के स्थान थे, सब मिलाकर ३२ स्थान थे। कहने का तात्पर्य है कि खाकचौक के सहित ३२ ही मंहत थे। बोले हमने ३१ बार गाय के घी के लड्डू बांटे। सन ३२ की बात है, उस जमाने में जब एक रूपये में साढ़े तीन सेर रबड़ी बढ़िया देशी गाय की मिलती थी और एक रूपये का डेढ़ सेर या दो सेर घी मिलता था। कहते हैं महाराज! एक सेर घी खरीदते तो पावभर तो खाकर के आते बाजार में। लोग कहते हमारा घी चखो- हमारा चखो। घी चखने-चखने में पाव भर हो जाता। उस समय जब इतना सस्ता घी था तो भी उस जमाने में गिने-चुने भण्डारे होते थे। हम उंगली पर गिनते थे। सबको पता होता था कि किस स्थान पर और कब भण्डारा है। एक स्थान में साल में एक भण्डारा होता था।

कहते थे कि भोज-भण्डारे ज्यादा नहीं थे पर भजन सुरक्षित था। क्यों सुरक्षित था भजन? महाराज कहते थे गाय सुरक्षित थी वृन्दावन में, इसलिये भजन सुरक्षित था। आज गाय नहीं है, इसलिए भजन भी सुरक्षित नहीं है। आज भोज-भण्डारे इतने हो रहे कि महाराज! खाते-खाते परेशान हैं। एक दिन में तीन-चार जगह प्रसाद करना पड़ता है। फिर भी कुछ लोगों की शिकायत रह जाती है। हमारे यहाँ भण्डारे में साधु, ब्राह्मण, ब्रजवासी नहीं आये। यही बात है कि नहीं, इसलिये हमें मूल में जाना पड़ेगा। गोमाता की सेवा, गव्य पदार्थों का सेवन, उससे वस्तुतः हमारा हृदय शुद्ध होगा। धर्म का सूक्ष्म रहस्य हमको ज्ञात होगा।

पूज्य महाराजजी का यही आग्रह है कि कम-से- कम पथमेड़ा गोधाम में जो आवे वे यहाँ से इतनी प्रेरणा तो लेते जावें कि हम प्रतिज्ञापूर्वक भारतीय देशी गाय के दूध, दही, घृत से बने हुए पदार्थों का व्यवहार करेंगे। यदि नहीं उपलब्ध होगा रूखी-सूखी रोटी खा लेंगे बाकि हम बाजार के अशुद्ध घी का और बाजार की मिठाइयों का प्रयोग नहीं करेंगे। कम-से-कम इतनी प्रेरणा तो लेकर जायें। हमको लगाता है कि जो किसी ना किसी प्रकार गाय से जुड़ा है वही यहाँ आता है। दूसरा व्यक्ति यहाँ आता नहीं। परम विद्वान गंगाधरजी पाठकजी आये हैं। अपने हाथ से १०-१५ गोमाताओं की सेवा करते हैं। लोग कहते हैं कि इतने बड़े पंडित होकर हाथ से गोबर उठाना, धार निकालना सारी सेवा पाठकजी करते हैं। इन्होंने जब हमको सुनाया तो हमने कहा कि तब तो आपको पथमेड़ा जरूर दर्शन करना चाहिये। क्योंकि आपने स्वयं अपने हाथ से गोसेवा कर रखी है तब आप पथमेड़ा की पवित्र भूमि के दर्शन के अवश्यमेव अधिकारी हैं। यहाँ आकर सद्प्रेरणा ली।

यहाँ की ही पावन भूमि में दो दिनों में पता नहीं अकस्मात मन में ऐसा आता है। वैसे तो मंच पर कहने की बात नहीं है फिर भी कह देते हैं। फिर कह सकें या न कह सकें। सत्य संकल्प तो भगवान है, जीव को संकल्प करना नहीं चाहिये। संकल्प सारे भगवान के ही पूर्ण होते हैं, पर सत् संकल्प करने से हम अशुभ संकल्प से तो बच सकते हैं। इसलिए सत् संकल्प करने में कोई हानि नहीं है। सत् संकल्प भगवान के ही संकल्प होते हैं। हमारे मन में दो दिनों से ऐसा भाव जग रहा था कि श्रीठाकुरजी कृपा करें तो कम-से-कम प्रदेश के स्तर का एक बहुत बड़ा गोसेवा का आदर्श पुष्टरूप से समाज के सामने प्रस्तुत हो और इसके बाद फिर प्रान्तों में गोसेवा का शुभारम्भ किया जाये उसमें पहला यह निश्चिय रखा जाये।

पूज्य महाराजजी के संरक्षण में हम लोग समर्पित होकर एक साथ प्रयास करें। कम से कम भारतवर्ष की पवित्र सत्वपुरी हैं उन पुरियों में पथमेड़ा गोधाम के विशाल, उसके सिद्धान्त के अनुरूप विचार के अनुरूप, मर्यादा के अनुरूप, एक विशाल गोसेवा सदन स्थापित हो। जो सात मोक्षदायनी पुरियों में विशाल गोशालाएँ स्थापित हों और फिर हम एक विशाल जनसमूह के द्वारा प्रेरित करें और वहाँ-वहाँ देवालयों के जो सेवायत हैं, जाकर के उनके चरणों में प्रार्थना करें, आग्रह करें, आप यहाँ के ठाकुरजी को गो-गव्य पदार्थों का ही भोग लगायेंगे। क्योंकि इन सप्तपुरियों में सारे भारतवर्ष का मनुष्य पहुँचता है। कन्याकुमारी से हिमालय तक और जगन्नाथपुरी से द्वारिका। दक्षिण के उत्तर में और पूर्व से पश्चिम में हमारे पवित्र धर्म ऋषियों के द्वारा कैसी अद्भुत व्यवस्था बनाई हुई है कि हिमालय तक कोई भी सनातनी विचरण कर लेता है। सात पुरियों

में भारत वर्ष का कोई क्षेत्र छूटा नहीं, चार ध ाम में भारतवर्ष का कोई कोना छूटा नहीं। कितनी सूझबूझ रही है हमारे पूर्वाचार्यों की। तो सम्पूर्ण देश का हिन्दू वहाँ पहुँचता है और जो व्यापार आदि के उद्देश्य को लेकर भारत से बाहर बसे हुए हैं, वे भी विचार रखते हैं कि हम उन-उन तीर्थों में जाकर दर्शन करें। अयोध्या जायें, मथुरा जायें, काशी जायें, द्वारिकापुरी जायें, उज्जैन महाकाल का दर्शन करें अथवा जगन्नाथ, बद्रीनाथ आदि में जाकर हम दर्शन करें। सभी लोगों के मन में यह भावना रहती है। वहाँ जब लोग पहुँचकर के विशाल गोशालाओं का, गोसदनों का दर्शन करेंगे तो निश्चित ही उन्हें गोसेवा की बड़ी प्रेरणा प्राप्त होगी और इसके बाद सप्तपुरी चारधाम में यह लक्ष्य हमारा रहे। ठाकुरजी जितना जल्दी इसको पुरा करें और भगवान ने ब्रज भूमि से शुरूवात कर दी है।

यद्यपि बीच में विघ्न-विक्षेप बहुत आते हैं, अच्छे काम तो विघ्न आते ही हैं। लेकिन हम तो बार-बार प्रार्थना करते हैं कि भाई कार्य जितना महत्वपूर्ण होगा उसमें विक्षेप उतने ही ज्यादा आयेंगे। उत्तम कोटि के मनुष्य का लक्षण यह है कि जितने विघ्न उसके सामने आते हैं, उनका उत्साह उतना ज्यादा बढ़ता जाता है। यह उत्तम कोटि के मनुष्य का खास लक्षण है। निम्न कोटि के प्राणी होते हैं वे यह सोचकर कि ऐसा करने से ऐसा संकट आ जायेगा, यह विघ्न है, यह विघ्न है, ऐसे विघ्नों के डर से, संकटों के डर से, भय के डर से वे उत्तम काम का आरम्भ ही नहीं करते हैं। यह नीच प्रकृति के प्राणियों का लक्षण है और मध्यम कोटि के प्राणी जो होते हैं वो कार्य का शुभारम्भ तो कर देते हैं पर कोई विघ्न आया तो, अरे छोड़ो प्रपंच छोड़कर के किनारे हो जाते हैं। विघ्न ही कार्य के गौरव को प्रमाणित करता है। विघ्न न हो तो कार्य का गौरव प्रमाणित नहीं होगा। सच्ची बात तो यह है कि हमारे द्वारा समर्पित, हमारी क्रिया में, हमारे पुरुषार्थ में, कहीं न कहीं किंचित दोष होता है उस कारण से भी विघ्न आते हैं। यदि कार्य करते हुए लक्ष्य को प्राप्त न कर सके तो बुद्धिमान मनुष्य का कर्तव्य यह नहीं है कि वह अन्य के ऊपर दोषारोपण करें। वह स्वयं आत्ममंथन करें कि आखिर हमारी क्रिया में कहाँ दोष आया। अर्थात हमारी क्रिया कहाँ दोषयुक्त हो गयी।

कल हमने चर्चा की थी। श्रीमद्भगवत् गीता में वैश्यों के स्वाभाविक धर्म के कर्म का निरूपण किया। वैश्यों का स्वाभाविक कर्म क्या है? यहाँ जितने लोग बैठे हैं उन सबको याद है। *कृषि गोरक्षय वाणिज्यम् वैश्यकर्म स्वभावजमः।।* कृषि, गोरक्षा और वाणिज्य ये वैश्य के स्वाभाविक कर्म हैं। स्वाभाविक कर्म का तात्पर्य जन्म जात धर्म से हैं। वैश्य के कर्तव्य कर्म हैं कौन-कौनसे? कृषि, गोरक्षा और वाणिज्य। कृषि पहले नम्बर, दूसरे नम्बर गाय और तीसरे नम्बर वाणिज्य यह क्रम है। गाय बीच में है। कृषि आगे है और वाणिज्य पीछे है। इसका तात्पर्य है, वैश्य के धर्म में गोरक्षा अंगीभूत धर्म है। अंग अंगी होता है तो गायकी रक्षा, गाय की सेवा, गाय का पालन अंगी है और कृषि जो है वो गोसेवा का अंग है। वाणिज्य अर्थात् व्यवसाय जो है वो गोसेवा का अंग है। आज स्थिति यह हो गई है दुर्भाग्य से कि अंगी जो गाय है वो अंग बन गयी। कृषि किसके लिये! गोरक्षा के लिये। क्योंकि बिना कृषि के गाय की सेवा, गाय की रक्षा सम्भव नहीं है। क्योंकि दाना-पानी कैसे देंगे। तो गाय के लिए ही कृषि और गाय के लिए ही वाणिज्य। गाय को अंगी बना लें हम और अपने जीवन के .....क्रमशः

बालक के आहार - विकास का क्रम

(लेखिका - स्वामी श्रीविशुद्धानन्दजी परिव्राजक महाराज)

अन्न देनेकी विधि

यदि किसी बालकके दाँत एक वर्षतक न निकलें तो उसे दूधके अतिरिक्त कुछ भी खानेको नहीं देना चाहिये। दाँत निकलनेपर भी मनमानी वस्तुएँ नहीं खिलानी चाहिये; क्योंकि आमाशय के निर्बल होनेसे अन्नादि पदार्थोंका ठीक पाचन नहीं हो सकता। आरम्भमें शिशुको जो आहार दिया जाय वह पतला, नरम, स्वल्प, बलकारक और किसी विकारके उत्पन्न किये बिना पच जानेवाला होना चाहिये। प्रायः युवती नारियाँ बिना दाँत निकले ही बिस्कुट, पेड़ा, लड्डू, मिठाई आदि गरिष्ठ भोजन बालकोंको देने लगती हैं, पर ऐसा करना नितान्त हानिकारक है। छः महीनेके बाद ही अन्नप्राशन-संस्कार प्रायः भारतवर्ष में होता है, वह भी इसी सिद्धान्तका निर्देश करता है; क्योंकि दाँत निकलनेकी आयु छः से आठ मास तक है। जब बालकके दो दाँत निकल आयें तो दूधकी मात्रा बढ़ा दें अथवा दूधमें साबूदाना, गेहूँका दरिया, चावलके लावा या चावलका माँड़ बल-काल देखकर देना चाहिये। प्रारम्भमें एकाएक बालकको रोटी नहीं देनी चाहिये, क्योंकि बिना दाँतोंके वह भली प्रकार चबायी नहीं जा सकती और उसके मेदामें भी रोटी-जैसी कड़ी वस्तु पचानेकी शक्ति नहीं होती। प्रथमसे ही बालकको अन्नके पदार्थोंपर निर्भर नहीं करना चाहिये। अपितु एक बार अन्न मिला दूध और यदि सम्भव हो तो एक बार संतरा, टमाटर, मालटा, अंगूर आदि का रस और शेष समयमें दूध ही देना चाहिये। जौ, गेहूँ, चनेकी रोटी और रसयुक्त फलोंद्वारा पलनेवाले बालक सदैव हृष्ट-पुष्ट और स्वस्थ रहते हैं एवं अरारोट, बिस्कुट, चाय, चावल और बाहरसे आनेवाले सूखे दूधसे पले हुए बच्चे सदैव निर्बल, रोगी और दुबले-पतले रहते हैं। कारण इन पदार्थोंमें अस्थि-समूहको दृढ़ करनेवाला तत्व प्रायः नहीं होता। इससे उनकी कमर झुक जाती है और पैरकी हड्डियाँ भी टेढ़ी हो जाती हैं। प्रारम्भसे बालकोंको मीठा बिल्कुल नहीं देना चाहिये। दाँत निकलने पर दूध में किचिंत् मिलाया जा सकता है। अतः अधिक मीठा जिन बालकोंको दिया जाता है, उनके शरीरमें रक्तविकार, फोड़ा-फुंसी तथा उदरमें कृमि हो जाते और यकृत् भी बढ़ जाया करता है। जब चार दाँत बालकके निकल आयें, तब रोटीके साथ पतली दाल और नरम शीघ्र पचनेवाले शाक दिये जा सकते हैं; किंतु गरिष्ठ पदार्थ-खोवे आदिकी मिठाई, चिवड़ा, आलू, घुइयाँ, शकरकंद, उबाली मटर, भुने चने आदि बिलकुल नहीं देना चाहिये। सड़े, गले, बासी, कडूए और चाय आदि अति गरम तथा दूषित पदार्थ भी नहीं देने चाहिये। शिशुको उच्छिष्ट कभी नहीं खिलाना चाहिये। इससे भयंकर मुँहा उत्पन्न हो जाता है। प्रारम्भमें कभी-कभी बालकोंको आहार अनुकूल नहीं पड़ता, उस समय बड़ी सावधानीसे कूट्टू, रामदाना और धानकी खील प्रयोगमें लाना चाहिये।

दूध कब छुड़ाना चाहिये

बालकको दूध कबतक पिलाना चाहिये। इसका ज्ञान प्रत्येक नारीको होना चाहिये और तद्नुसार व्यवहारमें लाना चाहिये। प्रायः माताएँ तबतक दूध पिलाती हैं, जबतक उनके स्तनोंमें दूध रहता है अथवा दूसरा बालक उदरमें नहीं आ जाता है। ऐसा करना बालक और माता दोनोंके लिये हानिकर है। यदि अवधिसे अधिक दिनतक माता अपने शरीरका अत्यावश्यक पोषक पदार्थ व्यय करती रहेगी तो अनेक व्याधियोंके लक्षण उत्पन्न हो जायँगे। मेरुदण्डमें कुछ खिंचावट-सी जान पड़ना, हृदयमें घबराहट, कोष्टबद्धता, शूल, वमन, अरुची, सिरमें भरीपन, कानोंद्वारा नाना शब्द सुनायी देना, अल्प श्रमसे हृदयकी गति बढ़ जाना, शरीर दुर्बल होना, रात्रिमें पसीना आना अथवा नेत्र-ज्योतिका कम होना आदि लक्षण जान पड़ते ही शिशुको ऊपरके दूधपर निर्भर कर स्तनपान बिलकुल छुड़ा देना चाहिये। अतएव यदि उपर्युक्त व्याधियाँ माताको न हों तो कबतक माता शिशुको दूध पिलाये? इस विषयमें वैज्ञानिकोंका मत एक वर्ष दूध पिलानेका है; किंतु भारतवर्षमें तीन वर्षतक बालक दूध पीते देखे जाते हैं, इससे अधिक हानि होती है। भारतीय विशेषज्ञोंके अनुसंधानसे डेढ़ वर्ष माता स्तनपान करा सकती है। दूध छुड़ानेका यह अभिप्राय न समझ लेना चाहिये कि डेढ़ वर्षके उपरान्त बालकको दूध देना ही बंद कर दें। दूध तो जीवनभर पीनेकी आवश्यकता है। उक्त कथनका अभिप्राय इतना ही है कि माता या धायीको अपना दूध डेढ़ वर्षसे अधिक एक बालकको नहीं पिलाना चाहिये। डेढ़ वर्षके उपरान्त बालक को गाय का दूध ही हर संभव कोशिश करके पिलाना चाहिये।

दूध छुड़ानेकी विधि

प्रायः देखनेमें आता है कि दूध छुड़ानेके लिये कोई-कोई माताएँ अपने स्तनमें मिर्चें या अन्य घृणात्मक पदार्थोंको लगाकर बालकका दूध छुड़ाती हैं। यह क्रिया बालक और माता दोनोंके लिये कष्टदायक है। यह कष्ट उन्हीं माताओंको उठाना पड़ता है जो बालकको नियमानुसार दूध नहीं पिलातीं। इन कृत्रिम साधनोंसे यदि बालक दूध छोड़ भी देता है तो आरम्भमें छः-सात दिन आहार बिलकुल नहीं करता, जिससे अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है। यदि माताएँ नियमसे प्रथम सप्ताहमें एक बार दूध पिलाना कम कर दें, दूसरे सप्ताहमें एक बार और कम करके स्वल्प अन्नाहार अथवा ऊपरी दूधकी मात्रा कुछ अधिक बढ़ा दें तो अनायास ही बालकका दूध बिना किसी कठिनाईके छूट जायगा।

दूध छुड़ानेके बाद बालकका आहार

बालकको दूध छूट जानेके बाद जौ, गेहूँ, चनेकी रोटी, मूँग, मसूर, अरहरकी दाल, दूध, थोड़ी चीनी, गोभी, टमाटर, भिंडी, परवल, लौकी, तुरोई आदिकी तरकारी देनी चाहिये। कड़ी वस्तुएँ, जो विलम्बसे पचनेवाली, बासी तथा बाजारकी मिठाईयाँ आदि तो बिलकुल नहीं देना चाहिये। प्रायः लोग बालकोंके भोजन और वस्त्रोंकी स्वच्छतापर भी ध्यान नहीं देते, इससे उनकी दिनचर्या और आचार-विचारोंपर कुसंस्कार अपना अधिकार जमा लेते हैं, इसलिये जिस प्रकार अपनेसे बड़ोंके प्रति स्वच्छ और मर्यादाका बर्ताव किया जाता है, ठीक उसी प्रकार बालकोंके प्रति भी होना चाहिये। बारह वर्षतकके बालक माता-पिताके लिये बालक ही हैं, इतनी आयुतक उनकी शिक्षा-दीक्षा, लालन-पालन, आहार-व्यवहार और चरित्रवान् बनानेका उत्तरदायित्व सर्वथा माता-पितापर उद्देश्यपूर्ति निहित है और यदि बालकोंको सुयोग्य बनानेकी व्यवस्था न हुई तो वे समाज और पृथ्वीके भार होकर पूर्वजोंके नामको कलंकित करेंगे।

(कविंता)

(१)

जान सको तो आज जगत में।
गौ की महिमा जानो रे।।
सब देवों की पूजा का फल।
गोसेवा में मानो रे।।

वेद पुराण सब सार बतलाते।
सद् ग्रन्थों ने यह गाया है।।
युगों–युगों से कामधेनु ने।
अपना दूध पिलाया है।।

द्वापर युग में गऊ चरा हरि।
सेवा धर्म बतायो रे।।
बंशी की धुन कृष्ण कन्हाई।
जन–जन ने समझायो रे।।

गौ–का दूध पीओ अमृत सम।
समझों वैद पुराणों रे।।
सेवा करके मेवा पाओ।
अपणो धर्म निभाणो रे।।

गौ से दीन कौन बतलाओ?।
सेवा में सब आगे आओ।।
अपने सब संताप मिटाओ।
मनुष्य जनम को सफल बनाओ।।

करुणा की जननी गौमाता।
धन वैभव मुक्ति वर दाता।।
इसकी जो सेवा कर पाता।
जन्म–जन्म के कष्ट मिटाता।।

(२)

उस 'गौ' के लिये तुमने क्या किया ?
जिसने माँ से अधिक हमें,
जीवन भर अमृत सा दूध पिलाया।
देकर जीवन का दान,शान से हमें अन्न खिलाया।
सेवा से कब इनकार किया,
कब अपना शीश झुकाया ?
साथ गई परलोक में, ईश्वर से तुम्हें मिलाया।
सुधा से मुग्ध हो दुग्ध, जिस गौ का तुमने पिया।
हाथ ह्रदय पर रख कर कहो,
उस 'गौ' के लिये तुमने क्या किया ?

(३)

पत्थर दिल करके तुमने जो मारा बेगुनाह किसी जीव को,
पर याद रखना मौत भी तड़पा–तड़पा कर ले जायेगी तुम्हें...!!
रोजी रोटी के नाम पर जीव मारते हो तुम रोज अनेक,
आयेगा एक दिन, जब दिए जाओगे नरक में तुम फैंक,..!!
निरपराध गायों को मारकर भयंकर पाप जो तुमने किया,
मै समझता हूँ तुमने अपनी ही माँ का कत्ल है कर दिया,...!!
कभी उनके उस दर्द और तकलीफ का अहसास तुम भी करो,
एक बार बस अपने बच्चों का सर काट कर जमीन पर तो धरो,.....!!
हे इन्सान! जरा मुझे ये बताओ तुम इतने निर्दयी क्यों बने,
क्या हुआ वो कारण जो तुम्हारे हाथ जीवां के–खून से सने,.....!!
इस धरती हर किसी को जीने का हक उसने बराबर है दिया,
तुम कब से बने खुदा जो तुमने प्राणी जीवन जो छीन लिया,.....!!
मत मारो इन प्राणियों को जो एक शब्द बोल सकते नहीं,
मारना है तो अपनों को मारो जिनको तुम कुछ कर सकते नहीं,.....!!
मैने सुना है प्राचीन काल में, राक्षस मदिरा–मांस ही खाते थे,
पर उनकी पहचान अलग थी, वो सींग लगा कर ही आते थे.....!!
पर तुम इन्सान होकर क्यों राक्षसों का वो रूप धर लेते हो,
और उस जीव को ही मार देते हो जिसको 'माँ' तुम कहते हो.....!!

कामधेनु
(कहानी)
(लेखक- श्री'चक्र')

आसपास कोई करीरकी लता भी नहीं है। हरिताम तमाल दूर खड़े प्रहरी-से प्रतीत होते हैं। कदम्ब-पुष्पोंका पराग यहाँ वायु यदा-कदा ही पहुँचा पाता है। नालोंने चारों ओर प्राकृतिक खाई खोद दी है और दक्षिण पद-प्रान्तमें सूर्यसुता उछलती-कूदती हँसती-सी इस एकाकी नीमके वृक्षको देखती जाती हैं। खूब सघन है यह। खंडहरके बाहर यह अकेला इस प्रकार खड़ा है जैसे कह रहा हो 'मैं स्वयं पूर्ण हूँ। मुझे किसीकी अपेक्षा नहीं।'

मैं अक्रूरसे और आगे निकल आया हूँ। वृन्दावनकी सीमा पीछे छूट चुकी है। पता नहीं क्यों आज दुपहरीमें ही घूमनेकी धुन सवार हुई। बस्तीसे एक बजे लौट आया। कुटियामें बैठा-बैठा करता क्या। लिखनेमें जी नहीं लगा। इधर टहलने और मौलसिरीके पुष्प चुनने आकर दूर निकल आया हूँ।

खंडहर कोई पुरानी धर्मशाला होगी। व्रजमें इस प्रकार मार्गसे दूर जहाँ-जहाँ ध र्मशालाओंका पाया जाना साधारण बात है। श्रद्धालुओंने इस आशासे कभी इन्हें बनवाया होगा कि कभी इनमें एकान्तप्रिय हरिभक्त निवास करेंगे।

एक दुग्धोज्ज्वल हृष्ट-पुष्ट गौ उस नीमके नीचे बैठी पागुर कर रही थी। सुखसे उसके नेत्र अधमुँदे हो रहे थे। कभी-कभी पूँछ थोड़ी हिल उठती थी। वैसे उसके शरीरपर एक भी मक्खी नहीं थी, जिसे वह उड़ाना चाहे।

मैं उस गौको देखकर आकर्षित हुए बिना न रहा। समीप जाकर बैठ गया। उसने भी एक बार नेत्र खोले, मेरी ओर देखा और फिर मेरे कंधेपर मुख रखकर इस प्रकार नेत्र बंदकर लिये मानो मुझे बहुत पहलेसे जानती हो। धीरे-धीरे मैं उसके गलकम्बल(गलेके निचले भाग) को सहलाने लगा था।

'खुदाके लिये...।' मैंने मुख फेरा। पीछे खंडहरके द्वारपर लंबी रजतवर्ण दाढ़ी तथा श्वेत दीर्घ केशवाले एक तेजस्वी वृद्ध चिथड़े लपेटे खड़े थे। वे कुछ कहते-कहते रुक गये थे। मैंने गौका मुख धीरेसे कंधेसे हटाया। वह इस प्रकार देखने लगी जैसे मेरा उठना उसे रुचिकर नहीं हुआ।

मैंने निकट जाकर वृद्धको अभिवादन किया। उन्होंने मेरी ओर देखा। भीतरतक देख लेनेवाली थी वह दृष्टि। मुझे विवशतः नेत्र झुका लेने पड़े।

संकेत पाकर उनके पीछे खंडहरमें गया। उस टूटे ढ़ेरका वर्णन करके समय नष्ट नहीं करूँगी। चारदीवारीके भीतर एक कमरेकी आध ी छत शेष थी। उसीके नीचे एक चीनी मिट्टीकी कलईका टीनका प्याला और तसला पड़ा था। एक फटा-सा टाटका टुकड़ा था। मुझे वही टुकड़ा बैठनेको उन्होंने दिया, लेकिन बैठे हम दोनों भूमिपर ही।

(२)

'वेल मि. ह्यूमैन, तुम्हें इन पुस्तकोंसे क्या कभी भी छुट्टी नहीं मिलती?'

'ओह, डॉक्टर!' उठकर उस अमेरिकनने महेन्द्रबाबासे हाथ मिलाया। 'मैं आज बड़ी उलझनमें पड़ गया हूँ। अच्छा, पहले चाय तो पीलो। खानसामा, दो कप चाय!'

ढ़ेरों पुस्तकें बिखरी पड़ी थीं। कुछ अंग्रेजीकी थीं, कुछ संस्कृतकी तथा कुछ अन्य भाषाओंकी। मेजके एक खाली कोनेपर खानसामा ने चायके प्याले रख दिये।

'आप तो प्रसिद्ध पशु-विशेषज्ञ हैं! ह्यूमैनने

चाय पीते-पीते कहा' भारतीय गौकी नस्ल तो बेहद गिर गयी है। यद्यपि वह यहींका पशु है।'

'मैंने प्रारम्भमें ही कहा था' डाक्टरने वैसे ही कहा ' आपको यहाँ कुछ नहीं मिलेगा। अमेरिकन गायोंकी यहाँसे तुलना नहीं की जा सकती।'

ह्यूमैन एक अमेरिकन पशु-विशेषज्ञ हैं और गायोंकी नस्ल सुधारनेके सम्बन्धमें अनेक देशोंमें भ्रमण कर चुके हैं। उनका कहना है कि गाय भारतीय पशु है और किसी-न-किसी प्रकार यहींसे संसारमें फैला है। इसी विश्वासके आधारपर वे भारतमें अन्वेषण करने आये हैं। एक भारतीय विशेषज्ञसे उन्होंने परिचय भी कर लिया है।

'लेकिन प्रारम्भमें यहाँकी नस्ल ऐसी नहीं थी।' ह्यूमैन गम्भीर हो गये 'अच्छा, तुम्हारी किताबोंमें यह कामधेनु शब्द बार-बार आया है। इसे तुम जानते हो?' उनके नेत्र डाक्टरके मुखपर स्थिर हो गये।

'ओह!' डाक्टर हँस पड़े 'तो यह है आपकी उलझन? आप पुरानी कहानियोंके चक्करमें पड़ गये हैं। इनमें कोई तथ्य नहीं है।' आधुनिक विचारोंके कारण महेन्द्र ऐसी बातोंपर ध्यान देना व्यर्थ समझते थे।

'मैं इसे ऐसा नहीं समझता' वह अमेरिकन विशेषज्ञ डाक्टरकी उपेक्षासे तनिक भी प्रभावित नहीं हुआ। उसका मुख और गम्भीर हो गया। चायका प्याला मेजपर रखकर वह सीधा बैठ गया। 'कामधेनुका शब्दार्थ तो हुआ चाहे जब और जितना बार इच्छा हो उतनी बार दुही जा सकने-वाली। लेकिन किताबोंमें तो दूसरा ही कुछ लिखा है।'

'आपका संस्कृत ज्ञान प्रशंसनीय है।' डाक्टरको इस अमेरिकनपर हँसी आ रही थी। वह क्यों मूर्खतापूर्ण बातोंपर विश्वास करने जा रहा है। 'फिर भी मैं आपको इन गपोड़ोंमें अपना अमूल्य समय नष्ट करनेकी सलाह नहीं दूँगा।

'मैं प्रयोग करूँगा।' उसे पक्की धुन थी। 'मैं ठीक तरहसे तुम्हारी किताबोंका अक्षर-अक्षर पालन करके प्रयोग करूँगा। मुझे एक अच्छी गाय ला दो। ऐसी गाय जो चाहे जब दुही जा सके और देखो, वह कपिला हो -बस!'

बिना उत्तरकी प्रतीक्षा किये वह मेजसे उठ खड़ा हुआ। डाक्टरने देख लिया कि कुछ कहना व्यर्थ होगा। ह्यूमैनके इच्छानुसार गाय ढूँढ़नेका वचन देकर उन्होंने हाथ मिलाया। उनके पीठ फेरते-फेरते वह अपनी पुस्तकोंके ढेरके बीच बैठ चुका था।

(३)

'आपतो मुसल्मान है' मैंने वृद्ध महात्मासे पूछा 'आपके धर्ममें तो कुर्बानी....।'

'उस पाक परवरदिगारके लिये माफ करो' बड़ी व्याकुलतासे उन्होंने मुझे रोका। 'किसीको कोई हक नहीं कि कुरानशरीफको बदनाम करे और हजरत साहबपर ऐसा दोष मढ़े।'

'मैं तो आम मुसल्मानोंकी धारणाकी बात कह रहा था।' मुझे खेद था कि मैंने एक वृद्ध फकीरको कष्ट पहुँचाया है। उनके नेत्र भर आये थे और मुख तमतमा-सा आया था'मेरा इरादा कतई खराब नहीं था।' मैंने क्षमा माँगी।

'तुम ठीक ही कहते थे' उनके स्वरोंमें ग्लानि थी। 'तुम किसीको गाली नहीं दूँगा। लोग गुमराह हो गये हैं। कह नहीं सकता कि वे कैसे ठीक रास्तेपर आवेंगे।' मस्तक झुकाकर वे सोचने लगे। किसी गम्भीर चिन्तामें पड़ गये दीखते थे।

(शेष अगले अंक में.....।)

गोविन्द की गाय

सांभारः- गोसेवा अंक

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।

भगवान् श्रीकृष्णको गौ अत्यन्त प्रिय है। भगवान्ने गिरिराज धारण करके इन्द्रके कोपसे गोप-गोपी एवं गायोंकी रक्षा की। अभिमान भंग होनेपर इन्द्र एवं कामधेनुने भगवान्को उपेन्द्र-पदपर अभिषिक्त किया और भगवान्को 'गोविन्द' नामसे विभूषित किया। गौ, ब्राह्मण तथा धर्मकी रक्षाके लिये ही भगवान् भूतलपर पधारते हैं-

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार।।

कृष्णलीलामें कुछ बड़े होते ही भगवान्ने गोवत्सचारणके लिये यशोदा मैयासे आज्ञा माँगी। मैयाने कहा- 'बेटा! अभी तुम छोटे हो, पुरोहितजी से मुहूर्त निकलवाकर फिर भेजेंगे। मैयाने प्रातःकालसे ही समस्त मंगल-कार्य किये और भगवान्को नहला-धुलाकर भलीभाँति सुसज्जित किया। सिरके ऊपर मोर-मुकुट, गलेमें माला तथा पीताम्बर धारण कराया। हाथमें बेंत तथा नरसिंहा दिया, फिर जब चरणोंमें छोटी-छोटी जूतियाँ पहनाने लगीं, तब ठाकुरजी बोले- 'मैया! मैं इनको नहीं पहनूँगा, यदि तू मेरी सारी गौओंको जूती पहना दे तो मैं इनको पहन लूँगा, जब गैया धरतीपर नंगे पाँव जायेगी तो मैं भी नंगे पाँव जाऊँगा।' समस्त व्रजलीलामें भगवान्ने पदत्राण नहीं पहने, सिले हुए वस्त्र नहीं पहने और न कोई शस्त्र उठाया। फलस्वरूप भूदेवी भगवान्के नंगे पैरोंको निष्कण्टक एवं कोमल स्पर्श ही प्रदान करती थीं और अपनेको सौभाग्यशालिनी मानती थीं।

भगवान्ने गोमाताकी रक्षाके लिये क्या-क्या नहीं किया। उन्हें दावानलसे बचाया, ब्रह्माजीसे छुड़ाकर लाये, इन्द्रके कोपसे रक्षा की। 'गोधन की सौं' शपथ प्रचलित करायी। 'मणिधरः वक्विदागणयन् गाः' वे अपने गलेमें पहनी हुई मणिमालाके मनकोंसे गायोंकी गिनती करके नन्दग्रामसे गोचारणके लिये चलते थे। वंशीकी ध्वनिसे प्रत्येक गायको नाम लेकर पुकारते थे। समस्त गायें उनसे आत्मतुल्य प्रेम करती थीं।

श्रीमद्भागवतके अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण गायोंके समूहके पीछे-पीछे चलते थे। इस विषयपर हृदय-प्रदेशमें एक नया भाव समुद्भुत हुआ है, जो इस प्रकार है- गायोंसे एक भक्तने बातचीत की-

भक्त- गोमाता! तुम अपने इष्टदेवके आगे-आगे क्यों चलती हो? उनके तो पीछे-पीछे चलनेका विधान है।

गौ- आप भूल करते हैं। अधिष्ठान तो सदा पीछे ही रहता है।

भक्त- यह तो तुमने वेदान्तकी बात कह दी। चर्चा भक्त और भगवान्की है।

गौ- भगवान् मेरे इष्टदेव और संरक्षण हैं। भगवान्के द्वारा सुरक्षित एवं संचालित हम सब अपने गन्तव्य स्थानपर बिना भय और संकोचके शीघ्र पहुँच जाती हैं तो मैया हमारा दूध निकालकर, उबालकर, शीघ्र लालाको पिला देती है। भगवान् यदि हमसे आगे चलेंगे तो हमको अपने विवेक-पुरुषार्थ एवं बलका प्रयोग करके उनका अनुगमन करना पड़ेगा, तब भय है कि हम कहीं मार्गमें पानी एवं घास देखकर विचलित हो जायँ, परंतु उनके द्वारा हाँके जानेपर हम निष्कण्टक राजमार्गपर निर्भय चली जाती हैं।

भक्त- यह तो आप ठीक कहती हैं, परंतु आगे-आगे चलनेपर तुम भगवान्के रूप-माधुर्यके दर्शनसे तो वंचित रह जाती हो।

गौ- भक्तजी! आप बड़े भोले हैं, भगवान् जब पीछे चलते हैं तो कभी-कभी मेरी पीठपर हाथ लगा देते हैं। कभी बेंतसे मधुर स्पर्श कर देते हैं और हम अपना मुँह मोड़कर उनका दर्शन करके परमानन्दमें मग्न हो नेत्र बंद करके चलती रहती हैं। यदि भगवान् आगे चलेंगे तो हम उनके मुखारविन्दके दिव्य दर्शन और स्पर्श-सुखसे वंचित रह जायँगी। यदि भगवान्ने कभी गरदन मोड़कर हमारी ओर देखा भी तो हमारे इष्ट प्रियतमको इसमें कितना श्रम होगा। यह विचारणीय है।

भक्त- तुम्हारे सौभाग्यकी बात तो अलौकिक है, परंतु तुम्हारा इस प्रकार चलना धर्म-विरुद्ध है। बड़ोंके आगे नहीं, पीछे चला जाता है।

गौ- धर्मशास्त्रके अनुसार मैं मुमूर्षु जीवोंको वैतरणी पार करा देती हूँ, वह मेरी पूँछ पकड़कर सरलतासे तर जाते हैं। मुझमें और मेरी पूँछमें यह शक्ति भगवान्के स्पर्शसे ही प्राप्त होती है।

भक्त- गोमाता! तुम्हारी बात तो अकाट्य है। फिर भी श्रेष्ठ पुरुषोंको अपना पृष्ट-अंग दिखाते हुए चलना अनुचित है।

गौ- शास्त्रानुसार मेरा गोबर और मूत्र पवित्र है, परंतु मेरा मुँह जूठा एवं अपवित्र है। अब बताओ कि मैं अपने इष्टकी ओर पवित्र अंग करूँगी अथवा अपवित्र? (यह सुनकर भक्तका सिर श्रद्धासे झुक जाता है)

भारतवर्षमें सनातनधर्मियोंका अधिदेववाद मौलिक सिद्धान्त है। जल, स्थल, नक्षत्र, दिशा, देश, पत्र, पुष्प आदि सबमें अधिदेवका वास बताया जाता है। वेद कहते हैं-

'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव।

भगवान् श्रीकृष्णने गीताके दसवें अध्याय में अपनी विभूतियोंका सविस्तार वर्णन किया है। अतएव गंगा, गीता, गायत्री, गोविन्द और गौ हमारी संस्कृतिकी आधारशिलाके प्रतीक हैं। इस सम्बन्धमें एक यह कथानक है कि सृष्टिरचना के समय जब गोका निर्माण हुआ, तब उसे देखकर सब देवता उसके रोम-रोममें प्रविष्ट हो गये। लक्ष्मीजीको गौके गुह्य-स्थान और गोबरमें निवास मिला। इससे हमारे देशमें गोसेवा और गोदानका विशेष महत्व है। राजा दिलीपकी गोसेवा सुप्रसिद्ध है। सत्यकाम जाबालने गोसेवा करके ब्रह्म-ज्ञान प्राप्त किया था।

एक कथामें वर्णन है कि एक ऋषि जलमें डुबकी लगाये समाधिस्थ पड़े थे। वे एक मछुएके जालमें फँस गये। बाहर निकालनेपर उन्हें देख सभी भयभीत हो गये। सूचना मिलनेपर देशका राजा उपस्थित हुआ, उसने ऋषिकी पूजा एवं स्तुति की तथा सादर राज्यमें चलनेका आग्रह किया। ऋषिने कहा- इस मछुवेको मेरे मूल्य के बराबर धन दे दो, तब हम चल सकते हैं। यह सुनकर राजा उस मछुए को प्रचुर धन-धान्य-सोना-चाँदी आदि रखता गया, परंतु ऋषि खड़े नहीं हुए और बोले कि क्या यही मेरा मूल्य समझते हो राजन। राजा ने अपना सम्पूर्ण राज्य ऋषि के मूल्य के बराबर रख दिया, लेकिन वे नहीं उठे। तब ऋषि ने कहा हे राजन! क्या तुम्हारे इस राज्य के बराबर ही एक ऋषि का मूल्य है? राजन मूल्य सोचकर लगाओ। तब निराश होकर राजाने किसी दूसरे ऋषिसे इसके समाधानकी प्रार्थना की। दूसरे ऋषि बोले- यह सब किसी ऋषि के बराबर नहीं हो सकते। अमूल्य धन होनेसे एक गौ आप मछुए को दे देना, वे ऋषि आप के साथ चल देंगे। राजा ने जाकर ऐसा ही किया। वे ऋषि महोदय तपाक से उठ खड़े हुए, क्योंकि खड़े होने में देरी को वे पूज्या गो का अपमान समझते थे। राजन अब तुमने हमारा सही-सही मूल्य आंका है, गो अमूल्य है। एक गो देकर आपने मुझे खरीद लियो है।

मैं अब राजी-खुशी आपके साथ चलने को तैयार हूँ। तब राजाने प्रसन्न होकर मछुवे को धन-धान्य सहित एक गौ देकर संतुष्ट किया और ऋषि को अत्यन्त आदर पूर्वक अपने राजभवन ले गया।

गौके प्रति आध्यात्मिक दृष्टिके अतिरिक्त एक लौकिक एवं आर्थिक दृष्टि भी है। भारतवर्ष एक कृषि-प्रधान देश रहा है। यहाँपर बैलोंसे खेती होती थी और गायके दूध, दही, घी, मक्खन, मट्ठे से समस्त प्राणियोंका पोषण होता था। गोबरमें मिट्टी आदि मिलाकर मकानोंपर पलस्तर एवं फर्शकी सफाई की जाती थी। गोमूत्रसे संजीवनी-बटी आदि आयुर्वेदिक ओषधियाँ बनायी जाती है।

भारतवर्षमें नगरोंमें गाय रखना आज सचमुच एक समस्या बन गयी है। गायके चारे एवं भूमिकी कमी है। इसकी उचित व्यवस्था होना आवश्यक है। नगरसे बाहर अच्छी-अच्छी गोशालाओंकी स्थापनाका प्रबन्ध किया जाना चाहिये। वहाँ अच्छी नस्लकी गाय और बछड़े पैदा कराये जायँ। गायोंको पर्याप्त दाना-चारा मिले। उनकी स्वच्छता, सेवा और चिकित्साकी उचित व्यवस्था हो। नगरके जो लोग गाय पालना चाहें, वे अपनी गाय गोशालामें रख दें और उनके पालनका खर्चा दें। इन दूध देनेवाली गायोंके अतिरिक्त एक ऐसा अन्य विभाग भी होना चाहिये, जहाँ लूली, लँगड़ी, अपाहिज, बूढ़ी गायें रह सकें और उनपर होनेवाला खर्च दानी-मानी सज्जनोंसे प्राप्त किया जाय। वर्तमान भारतीय संविधानकी धारा ४८ में गोसंवर्धनकी आज्ञा निर्धारित है। उनका पालन उत्साहपूर्वक किया जाना चाहिए।

दुर्भाग्यकी बात है कि देशवासियोंकी कथनी और करनीमें बहुत अन्तर आ गया है। हम 'गोमाताकी जय' के नारे जोरसे लगाते हैं, परन्तु क्रिया करते समय अपने धर्म, सत्य और कर्तव्यको भूल जाते हैं। एक छोटा-सा उदाहरण देते हैं।

सन् १९८१ में हमको काशीमें कुछ लम्बे समयतक रहनेका अवसर मिला। उन दिनों श्रद्धेय धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी भूतलपर विराजमान थे। उनके दर्शनके लिये हम रिक्शेमें बैठकर केदारघाट जा रहे थे। एक गाय रास्तेमें बैठी थी, जब वह रिक्शाकी घंटी बजानेसे नहीं उठी तो रिक्शेवालेने पैरसे मारकर उसे उठा दिया। यह देखकर पासके दूकानदारोंने हला किया, हाय-हाय गौकेलात मारता है। इस घटनासे हमारे चित्तपर बड़ा प्रभाव पड़ा कि काशी हिन्दू-संस्कृतिका गढ़ है, देखो! यहाँ गौका कितना सम्मान है। दो-चार दिन पीछे हमें दशाश्वमेध-घाटकी सब्जी-मंडीमें जानेका अवसर मिला तो यहाँएक गाय किसी दूकानदारकी गोभीका फूल उठाकर ले जा रही थी तो दूकानदारने लाठी मारकर उससे अपना फूल छीन लिया। यह देखकर हमको विचार हुआ कि लोग समझते हैं कि गायको पैर लगाना पाप है, पर उसे लाठीसे मारना पाप नहीं है। गोवध होना अवश्य आपत्तिजनक है, परंतु गायके द्वारा हमारे गोभीके फूलका खाया जाना उससे भी अधिक कष्टदायक है। अतएव हमारी गायें जबतक गली कूचोंमें मल खाती हुई और दूकानदारोंद्वारा प्रताड़ित होकर घूमती हैं, तबतक उनकी केवल जय-जयकार करना निरर्थक है। जो लोग उनके दूधका उपयोग कर उन्हें खानेके लिये सड़कपर खुला छोड़ देते हैं, तो उनकी गोसेवा एक विडम्बना ही तो है!

हमारी संस्कृतिमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ हैं। शास्त्रका आदेश है कि पुरुषार्थ काम और अर्थ, धर्म- नियन्त्रित हो तथा धर्म मोक्षोन्मुख हो, परंतु आजकल प्रायः अर्थ-नियन्त्रित धर्म तथा कामोन्मुख मोक्ष देखनेमें आता है।

दान-एक विहंगम दृष्टि

साभारः- दानमहिमा अंक

(लेखक-राधेश्याम खेमका सम्पादक गीताप्रेस)

पिछले अंक से आगे.....

न्यायोपार्जितवित्तस्य दशमांशेन धीमतः।
कर्तव्यो विनियोगश्च ईश्वरप्रीत्यर्थमेव च।।

अन्यायपूर्वक अर्जित धन का दान करने से कोई पुण्य नहीं होता। यह बात **'न्यायोपार्जितवित्तस्य'** इस वचनसे स्पष्ट होती है। दान देनेका अभिमान तथा लेनेवालेपर किसी प्रकारके उपकारका भाव न उत्पन्न हो, इसके लिये इस श्लोकमें कर्तव्य पदका प्रयोग हुआ है। अर्थात् धनका इतना हिस्सा दान करना- यह मनुष्यका कर्तव्य है। मानवका मुख्य लक्ष्य है- ईश्वरकी प्रसन्नता प्राप्त करना। अतः दानरूप कर्तव्यका पालन करते हुए भगवत्प्रीतिको बनाये रखना भी आवश्यक है। इसलिये **'कर्तव्यो विनियोगश्च ईश्वरप्रीत्यर्थमेव च'** इन शब्दोंका प्रयोग किया गया है। यदि किसी व्यक्तिके पास एक हजार रूपये हों, उसमेंसे यदि उसने एक सौ रूपये दान कर दिये तो बचे हुए नौ सौ रूपयोंमें ही उसकी ममता और आसक्ति रहेगी। इस प्रकार दान ममता या आसक्तिको कम करके अन्तःकरणकी शुद्धिरूप प्रत्यक्ष (दृष्ट) फल प्रदान करता है और शास्त्र-प्रमाणानुसार वैकुण्डलोककी प्राप्तिरूप अप्रत्यक्ष (अदृष्ट) फल भी प्रदान करता है।

द्रव्यकी शुद्धि

देवीभागवतमें तो यह स्पष्ट कहा गया है कि अन्यायसे उपार्जित धनद्वारा किया गया शुभ कर्म व्यर्थ है। इससे न तो इहलोकमें कीर्ति ही होती है और न परलोकमें कोई पारमार्थिक फल ही मिलता है-

अन्यायोपार्जितेनैव द्रव्येण सुकृतं कृतम्।
न कीर्तिरिह लोके च परलोके न तत्फलम्।।

धनके पाँच विभाग

उपार्जित धनके दशमांशका दान करनेका यह विधान सामान्य कोटिके मानवोंके लिये किया गया है, पर जो व्यक्ति वैभवशाली, धनी और उदारचेता हैं, उन्हें तो अपने उपार्जित धनको पाँच भागोंमें विभक्त करना चाहिये।

धर्माय यशसेऽर्थाय कामाय स्वजनाय च।
पंचधा विभजन् वित्तमिहामुत्र च मोदते।।

(१) धर्म (२) यश (३) अर्थ (व्यापार आदि आजीविका) (४) काम (जीवनके उपयोगी भोग) (५) स्वजन (परिवार)- के लिये इस प्रकार पाँच प्रकारके धनका विभाग करनेवाला इस लोकमें और परलोकमें भी आनन्दको प्राप्त करता है।

यहाँ व्यापार आदि आजीविकाके लिये धनका विभाग इसलिये किया गया है कि जिससे जीविकाके साधनोंका विनाश न हो; क्योंकि भागवतमें यह स्पष्ट कहा गया है कि जिस सर्वस्व-दानसे जीविका भी नष्ट हो जाती हो, बुद्धिमान पुरुष उस दानकी प्रशंसा नहीं करते; क्योंकि जीविकाका साधन बने रहनेपर ही मनुष्य दान, यज्ञ, तप आदि शुभकर्म करनेमें समर्थ होता है-

न तद्दानं प्रशंसन्ति येन वृत्तिर्विपद्यते।
दानं यज्ञस्तपःकम्र लोके वृत्तिमतो यतः।।

जो मनुष्य अत्यन्त निर्धन हैं, अनावश्यक एक पैसा भी खर्च नहीं करते तथा अत्यन्त कठिनाईपूर्वक अपने परिवारका भरण-भोषण कर पाते हैं, ऐसे लोगोंके लिये दान करनेका विधान शास्त्र नहीं करते। इतना ही नहीं, यदि पुण्यके लोभसे अवश्यपालनीय वृद्ध माता-पिताका तथा साध्वी पत्नी और छोटे बच्चोंका पालन न

करके उनका पेट काटकर जो दान करते हैं, उन्हें पुण्य नहीं, प्रत्युत पापकी ही प्राप्ति होती है।

शक्तः परजने दाता स्वजने दुःखजीविनि।
मध्वापातो विषास्वादः स धर्मप्रतिरूपकः।।

दान का रहस्य

स्कन्दपुराणमें वर्णन है कि राजा धर्मवर्माने दानके तत्वको जाननेके लिये तप किया तो आकाशवाणीद्वारा एक श्लोकमें इसके रहस्यका वर्णन किया गया-

द्विहेतुः षडधिष्ठानं षडंग च द्विपाकयुक्।
चतुष्प्रकारं त्रिविधं त्रिनाशं दानमुच्यते।।

अर्थात् दानके दो हेतु, छः अधिष्ठान, छः अंग, दो प्रकारके फल, चार प्रकार, तीन भेद एवं तीन विनाश करनेके कारण हैं।

श्लोकका अर्थ तो स्पष्ट था, परंतु अनेक विद्वान, ऋषि, मुनि इसकी विस्तृत व्याख्या करनेमें सफल नहीं हुए। अन्तमें महामुनि नारदद्वारा इस श्लोकके वास्तविक अर्थको प्रकट किया गया, जिसमें दानके रहस्यका वर्णन किया गया है।

दानके हेतु

दानके दो हेतु- श्रद्धा एवं शक्ति कहे गये हैं। दानकी मात्रा नहीं, बल्कि श्रद्धा एवं शक्ति ही उसके फलकी वृद्धि या क्षयके कारण होते हैं।

श्रद्धा- दानमें श्रद्धाका बहुत महत्व है। बिना श्रद्धाके दिया गया सर्वस्व दान भी निष्फल हो जाता है। न्यायोपार्जित धनका जो व्यक्ति सत्पात्रको दान करते हैं, वह थोड़ा होनेपर भी वे भगवान्‌को प्रसन्न कर लेते हैं। श्रद्धा भी सात्विक, राजसिक एवं तामसिक तीन प्रकारकी कही गयी है।

शक्ति- कुटुम्बका पालन-पोषण करनेके बाद जो धन बचे, वही दान करनेकी शक्ति कही गयी है। आश्रित जनको कष्टमें रखकर किसी सुखी व्यक्तिको दान करनेसे उसका फल मधुके समान मीठा न होकर विषके समान कटु हो जाता है। आपत्तिकाल पड़नेपर भी सामान्य, याचित, न्यास, बन्धक, दान, दानसे प्राप्त, अन्वाहित, निक्षिप्त एवं सान्वय-सर्वस्व दान-इन नौ प्रकारके धन या पदार्थोंका दान नहीं करना चाहिये।

दानके अधिष्ठान

धर्म, अर्थ, काम, लज्जा, हर्ष एवं भय- ये दानके छः अधिष्ठान हैं। बिना प्रयोजनके धार्मिक भावनासे दिया गया दान धर्म-दान है। प्रयोजनवश दिया गया दान अर्थ-दान है। सुरापान एवं जूएके प्रसंगमें अनधिकारी मनुष्यको जो दिया जाता है, वह काम-दान है। याचकद्वारा सबके सामने माँग लेनेपर लज्जावश या संकोचवश प्रतिज्ञा करके जो दिया जाता है, वह लज्जा-दान है। शुभ समाचार सुनकर जो दिया जाता है, वह हर्ष-दान है। निन्दा, हिंसा एवं अनर्थके भयसे विवश होकर जो दिया जाता है, वह भयदान है।

दानके छः अंग

दानकर्ता, प्रतिग्रह लेनेवाला, शुद्धि, दानका पदार्थ, देश एवं काल- ये दानके छः अंग कहे गये हैं।

दानकर्ता धर्मात्मा, दानकी अभिलाषा रखनेवाला, व्यसनरहित, पवित्र एवं अनिन्दित कर्मसे व्यवसाय करनेवाला होना चाहिये।

प्रतिग्रहीता सात्विक, दयालु, कुल-विद्या-आचारसे श्रेष्ठ तथा शुद्ध जीवन-निर्वाहकी वृत्ति करनेवाला होना चाहिये।

शुद्धिका अर्थ है कि दान करते समय याचकके प्रति हार्दिक प्रेम हो, उन्हें देखकर प्रसन्नता हो

तथा उनमें दोषदृष्टि न रखकर उनका सत्कार हो।

जिस देश एवं कालमें जो पदार्थ दुर्लभ हों, उन्हें उसी देश एवं कालमें दान करनेसे श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है।

दान के दो फल

महात्माओंने दानके दो फल कहे हैं। इनमें एक इहलोक के लिये होता है तथा दूसरा परलोकके लिये।

दानके चार प्रकार

ध्रुव, त्रिक, काम्य एवं नैमित्तिक ये चार दानके प्रकार कहे गये हैं। सार्वजनिक कार्योंके लिये जैसे बाग-बगीचे लगवाना, धर्मशाला बनवाना एवं पीनेके पानीका प्रबन्ध करना-करवाना इत्यादिके लिये दिया गया दान ध्रुव है। जो प्रतिदिन दिया जाता है, उसे त्रिक कहते हैं। किसी इच्छाकी पूर्तिके लिये किया गया दान काम्य दान है। नैमित्तिक दान तीन प्रकार होता है। ग्रहण, संक्रान्ति आदि कालकी अपेक्षासे किया गया दान कालापेक्ष नैमित्तिक दान है। श्राद्ध इत्यादि क्रियाओंसे जुड़ा क्रियापेक्ष नैमित्तिक दान है। विद्या-प्राप्ति एवं अन्य संस्कार आदि गुणोंकी अपेक्षासे किया गया दान गुणापेक्ष नैमित्तिक दान है।

दान के तीन भेद

उत्तम, मध्यम एवं कनिष्ठ- दानके तीन भेद कहे गये हैं-

गृह, मन्दिर, भूमि, विद्या, गौ, कूप, स्वर्ण एवं प्राण इन आठ पदार्थोंका दान शास्त्रोंमें उत्तम कहा गया है। अन्न, बगीचा, वस्त्र एवं वाहनादि पदार्थोंके दानको मध्यम दान कहा गया है। जूता, छाता, बर्तन, दही, मधु, आसन, दीपक, काष्ठ एवं पत्थर इत्यादि पदार्थोंके दानको कनिष्ठ दान कहा गया है।

दानके नाशके तीन कारण

पश्चात्ताप, अपात्रता एवं अश्रद्धा ये तीन कारण दानके नाशक हैं।

दान देकर बादमें पश्चात्ताप हो, वह आसुरदान होता है। इसका कुछ भी फल प्राप्त नहीं होता। बिना श्रद्धाभावके जो दान दिया जाता है, वह राक्षसदान है। यह भी निष्फल होता है। दान प्राप्त करनेवालेको डाँट-डपटकर या उसे कटुवचन सुनाकर जो दान दिया जाता है, वह पिशाचदान माना गया है। यह दान भी व्यर्थ है। अपात्र व्यक्तियोंको दिया गया दान भी पिशाचदानकी श्रेणीमें रखा गया है। दुराचारी तथा विद्याहीन व्यक्ति जातिसे ब्राह्मण होनेपर भी कुपात्र होता है, जो प्रतिग्रह स्वीकार करनेपर स्वयं भी नष्ट होता है तथा दानकर्ताको भी नष्ट करता है। कुपात्र ब्राह्मणको दानमें मिली भूमि उसके अन्तःकरणको, गाय उसके भोगोंको, सोना उसके शरीरको, वाहन उसके नेत्रोंको, वस्त्र उसकी स्त्रीको, घी उसके तेजको एवं तिल उसकी सन्तानको नष्ट कर देते हैं। अतः पात्रता न होनेपर कभी प्रतिग्रह स्वीकार नहीं करना चाहिये।

शास्त्रोंमें दान देनेकी जितनी महिमा आयी है, उतनी ही अथवा उससे भी अधिक असत्प्रतिग्रहकी निन्दा की गयी है। दान देनेमें जितनी अधिक सावधानी बरतनेकी बात कही गयी है, उससे अधिक सावधानी बरतनेकी बात दान लेनेके विषयमें कही गयी है। दान देनेसे जहाँ पुण्यजनकताकी बात, अपनी कई पीढ़ियोंको तारनेकी बात और परलोकमें उत्तम गति तथा अक्षय लोकोंकी प्राप्तिकी बात कही गयी है, वहीं असत्प्रतिग्रहसे अधोगति प्राप्त करनेकी बात आयी है। अतः दानग्रहीताको पूर्ण सावधानी बरतनी चाहिये। .....क्रमश

धर्मनिष्ठ सबसे अजेय है

साभारः- सत्कथा अंक

देवता और दैत्योंने मिलकर अमृतके लिये समुद्र मन्थन किया और अमृत निकला भी; किंतु भगवान् नारायणके कृपापात्र होनेसे केवल देवता ही अमृत-पान कर सके। दैत्य छले गये, उन्हें परिश्रम ही हाथ लगा। परिणाम में देवासुर-संग्राम होना ही था। उसमें भी अमृत-पानसे अमर बने देवता ही विजयी हुए। दैत्यराज बलि तो युद्धमें मारे ही गये थे; किंतु आचार्य शुक्रने बलि तथा युद्धमें मरे अन्य दैत्योंको भी अपनी संजीविनी विद्यासे जीवित कर लिया। बलि अपने अनुचरोंके साथ अस्ताचल चले गये।

अपनी सेवासे बलिने आचार्य शुक्रको प्रसन्न कर लिया। आचार्यने एक यज्ञ कराया। यज्ञकुण्डसे प्रकट होकर अग्निने बलिको दिव्य रथ, अक्षय त्रोण तथा अन्य शस्त्र दिये। अब फिर बलिने स्वर्गपर चढ़ाई कर दी। इस बार बलिका तेज इतना दुर्धर्ष था कि देवराज इन्द्र उन्हें देखते ही हताश हो गये। देवगुरु बृहस्पतिने भी देवताओंको चुपचाप भागकर पर्वतीय गुफाओंमें छिप जानेका आदेश दिया। अमरावतीपर बिना युद्ध बलिने अधिकार कर लिया।

'स्वर्गके सिंहासनपर वही स्थिर रह सकता है, जिसने सौ अश्वमेघ यज्ञ पूर्ण किये हों। कोई भी कर्म तभी फल देता है, जब वह कर्मभूमि पृथ्वीपर किया गया हो। स्वर्गमें किये कर्म कोई फल नहीं देते। तुमने स्वर्गपर अधिकार कर लिया है; किंतु यह अधिकार बना रहे, इसके लिये सौ अश्वमेघ यज्ञ तुम्हें पूरे कर लेने चाहिये।' आचार्य शुक्रने बलिको समझाया।

बलिने तो अक्षरशः आचार्यकी आज्ञाके पालनका ही इधर व्रत ले लिया था। पृथ्वीपर नर्मदाके पवित्र तटपर उनका यज्ञ-मण्डप बना और एकके बाद दूसरा अश्वमेघ यज्ञ वे करने लगे। निन्यानबे अश्वमेघ यज्ञ निर्विघ्न पूरे हो गये। अन्तिम अश्वमेघ भी प्रारम्भ हो गया।

उधर देवमाता अदिति अपने गृहहीन पुत्रोंके दुःख से अत्यन्त दुखी थीं। उन्होंने अपने पतिदेव महर्षि कश्यपसे प्रार्थना की- 'ऐसा कोई उपाय बतानेकी कृपा करें, जिससे मेरे पुत्रोंकी विपत्ति दूर हो जाय।

महर्षिने पयोव्रत करके भगवान्‌की आराधना करनेका आदेश दिया। अदितिने बड़ी श्रद्धा और तत्परतासे वह व्रत पूरा किया। उनकी आराधनासे संतुष्ट होकर नारायणने उन्हें दर्शन दिया। भगवान्‌ने कहा- 'देवि! जो ार्मकी रक्षा करता है, धर्म सदा उसकी रक्षा करता है। जो धर्मात्मा है और धर्मज्ञ आचार्योंके आदेशपर चलता है, वह मेरे लिये भी अजेय है। उसके साथ बलप्रयोग करके कोई विजयी नहीं हो सकता। लेकिन मेरी उपासना व्यर्थ नहीं जाती। मैं तुम्हारे पुत्र-रूपमें अवतार लूँगा और देवताओंको उनका स्वर्ग युक्तिपूर्वक दिलाऊँगा।'

वरदान देकर भगवान् अन्तर्हित हो गये। अदिति के गर्भसे उन्होंने वामनरूपमें अवतार धारण किया। महर्षि कश्यपने ऋषियोंके साथ वामनजीका संस्कार कराया। यज्ञोपवित- संस्कार हो जानेपर वामन बलिकी यज्ञशालाकी ओर चल पड़े। खड़ाऊँ पहिने, कटिमें मेखला बाँधे, छात्ता लगाये, दण्ड और जलभरा कमण्डलु लिये, ब्रह्मचारी वेशमें वामन साक्षात् सूर्यके समान तेजस्वी लगते थे।

दैत्यराज बलिका अन्तिम अश्वमेघ यज्ञ भी पूर्णाहुति के निकट ही था। यज्ञशालाके द्वारपर मूर्तिमान मार्तण्ड के समान जब वामन पहुँचे, तब उनके सम्मानमें सभी ऋत्विज्, दैत्यराज बलि एवं अन्य सदस्य खड़े हो गये। बलिने बड़े आदरसे उन्हें उच्चासनपर बैठाया। उनके चरण धोकर उनकी पूजा की। अन्तमें नम्रतापूर्वक बलि ने हाथ जोड़कर कहा- 'आप ब्रह्मचारी ब्राह्मणकुमार हैं। आपके पधारनेसे मैं धन्य हो गया। अब आप जिस उद्देश्यसे आये हैं, वह बतानेकी कृपा करें। जो कुछ आप माँगना चाहें, माँग लें।'

भगवान् वामनने दैत्यकुलके औदार्यकी प्रशंसा की, दानवीरोंकी चर्चा की और बलिकी दानशीलताकी भी प्रशंसा की। इतना करके उन्होंने कहा-'मुझे अपने पैरोंसे तीन पद भूमि चाहिये।'

बलि हँस पड़े और बोले- 'विप्रकुमार! आप विद्वान है, किंतु है तो बालक ही। अरे, भूमि ही माँगनी है तो इतनी भूमि तो माँग लो, जिससे तुम्हारी आजीविका चल जाय।'

परंतु जिसे तीनों लोक चाहिये, वह आजीविका मात्रके लिये भूमि क्यों ले। बड़ी गम्भीरतासे वामन बोले- 'राजन्! तृष्णा बहुत बुरी होती है। यदि मैं तीन पद भूमिसे संतुष्ट न होऊँ तो तृष्णा तो राज्य चाहेगी, फिर राज्यकी माँग बढ़कर पूरा भूमण्डलकी माँग करेगी और आप जानते ही हैं कि तृष्णाकी तृप्ति तो आपका त्रिलोकीका राज्य पाकर भी नहीं किया। मुझे तो आप मेरे पैरोंसे नपी तीन पद भूमि दे दें- मेरे लिये इतना ही बहुत है।'

'अच्छी बात! जैसे आप प्रसन्न रहें।' बलिने हँसकर संकल्प करनेके लिये पत्नीसे जलपात्र माँगा। परंतु इतनेमें शुक्राचार्य वामनजीको पहचान गये थे। उन्होंने अपने शिष्यको डाँटा- 'मूर्ख! क्या करने जा रहा है? ये नन्हे-से ब्राह्मणकुमार नहीं हैं। इस वेषमें तेरे सामने ये साक्षात् मायामय विष्णु खड़े हैं। ये अपने एक पदमें भूलोक और दूसरेमें स्वर्गादि लोक नाप लेंगे। तीसरा पद रखनेको स्थान छोड़ेंगे ही नहीं। सर्वस्व इन्हें देकर तू कहाँ रहेगा? इन्हें हाथ जोड़ और कह दे कि देवता! कोई और यजमान ढूँढो। मुझपर तो कृपा ही करो।'

'ये साक्षात् विष्णु हैं!' बलि भी चौंके। अपने आचार्यपर अविश्वास करनेका कारण नहीं था। मस्तक झुकाकर दो क्षण उन्होंने सोचा और तब उस महामनस्वीने सिर उठाया- 'भगवन्! आप इतने बड़े-बड़े यज्ञोंसे मेरे द्वारा जिन यज्ञमूर्ति विष्णुकी आराधना कराते हैं, वे साक्षात् विष्णु ये हैं या और कोई; मैं तो भूमि देने को कह चुका। प्रहलादका पौत्र 'हाँ' करके कृपणकी भाँति अस्वीकर कर दे, यह नहीं हो सकता। मेरा कुछ भी हो जाय, द्वारपर आये ब्राह्मणको मैं शक्ति रहते विमुख नहीं करूँगा।

शुक्राचार्यको क्रोध आ गया। उन्होंने रोषपूर्वक कहा- 'तू मेरी बात नहीं मानता, अपनेको बड़ा धर्मात्मा और पण्डित समझता है; इससे तेरा वैभव तत्काल नष्ट हो जायगा।

बलिने मस्तक झुकाकर गुरुदेवका शाप स्वीकार कर लिया किंतु अपना निश्चय नहीं छोड़ा। जल लेकर उन्होंने वामनको तीन पद भूमि देनेका संकल्प कर दिया। भूमिदान लेते ही वामन भगवान्ने विराट्रूप धारण कर लिया। एक पदमें पूरी भूमि उन्होंने नाप ली और दूसरा पद उठाया तो उसके अगुंष्ठका नख ब्रह्माण्डावरणको भेदकर बाहर चला गया। अब भगवान्ने बलिसे कहा- 'तू बड़ा दानवीर बनता था। मुझे तूने तीन पद भूमि दी है। दो पदमें ही तेरा त्रिलोककी राज्य पूरा हो गया। अब तीसरे पदको रखनेका स्थान बता।'

बलिने मस्तक झुकाकर कहा- 'सम्पत्तिसे सम्पति का स्वामी बड़ा होता है। आप तीसरा पद मेरे मस्तक पर रखें और अपना दान पूर्णतः ले लें।

भगवान्ने तीसरा पद बलिके मस्तकपर रखकर उन्हें धन्य कर दिया। इन्द्रको स्वर्ग प्राप्त हुआ। स्वयं वामन भगवान उपेन्द्र बने इन्द्रकी रक्षाके लिये; किंतु बलिको तो उन्होंने अपने आपको ही दे दिया। स्वर्गसे भी अधिक ऐश्वर्यमय सुतललोक प्रभुने बलिको निवास के लिये दिया। अगले मन्वन्तरमें बलि इन्द्र बनेंगे, यह आश्वासन दिया। इससे भी आगे यह वरदान दिया कि वे अखिलेश्वर स्वयं हाथमें गदा लिये सदा सुतलमें बलिके द्वारपर उपस्थित रहेंगे। इस प्रकार छले जाकर भी बलि विजयी ही रहे और प्रभु उनके द्वारपाल बन गये।

..पृष्ठ ३३ का शेष भाग.. ७ वारों से जुड़े व्रत एवं उपवास होते हैं। भारतीय संस्कृति जीवन के आशा एवं आनन्दमय पक्ष को महत्त्व देती है। हमारे वैदिक ऋषियों एवं जीवनदर्शन के निष्णात मनीषियों ने एक ऐसा मानव-संस्कृति हमें दी, एक ऐसा जीवनदर्शन हमें दिया जो जीवन के आस्थामय एवं आनन्दमय पक्ष को ही महत्त्व देता है।

भारतीय संस्कृति की एकता इन व्रतों और त्योहारों में अनुस्यूत दिखायी देती है। इन पर्वों एवं त्योहारों के अवसर पर मन्दिरों, तीर्थस्थलों एवं धार्मिक प्रतिष्ठानों में अपनी-अपनी भाषा, वेश-भूषा, खान-पान, रंग और प्रदेश की विविधताओं को विस्मृत कर जनसमूह एकत्र होते हैं और अपनी आस्थामय भक्तिभावना अत्यन्त उत्साह तथा उमंग के साथ आराध्य के प्रति निवेदित करते हैं। यह सिलसिला अनन्तकाल से चला आ रहा है। भारत केवल भौगोलिक इकाई नहीं है। उत्तर तथा दक्षिण, पूर्व तथा पश्चिम दिशाएँ यहाँ तब अपना कोई अर्थ नहीं रखतीं जब तमिल प्रदेश का व्यक्ति कुम्भपर्व के स्नान के लिये हरिद्वार की हरिकी पैड़ीपर आता है और उत्तर का व्यक्ति रामेश्वरम् अथवा तिरूपति बालाजी के दर्शन के लिये जाता है। वास्तवमें भारत एक सांस्कृतिक इकाई है और ये व्रत-त्यौहार इस सांस्कृतिक एकता के ताने-बाने के मूल सूत्र हैं।

गो साहित्य सृजन हेतु विशेष निवेदनः- गो-लोकदेवताओं एवं अनुकरणीय गोभक्तों-गोसेवकों की जानकारी भेजें।

समस्त गोसेवक-गोभक्त पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आपके जिला, तहसील, पंचायत एवं गांव क्षैत्र में गोसेवा-गोरक्षा से जुड़े श्रेष्ठ एवं प्रेरणादायी गोरक्षक लोक देवताओं तथा देवात्माओं जैसे कि झूंझार, भोमीया आदि की पूरी गोसेवार्थ-गोरक्षार्थ जीवन चरित्र (जीवनी) एवं चित्र आदि सामग्री भेजें।

राजस्थान सहित भारतवर्ष की पावन धरा गोसेवा एवं गोभक्ति भाव से सदैव ओत-प्रोत रही हैं। सर्वत्र ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने अपने जीवन को गोसेवा-गोरक्षा में सम्पूर्ण रूपसे न्यौछावर कर दिया। समाज के लिये ऐसे प्रेरणादायी गोसेवकों-गोरक्षकों की सम्पूर्ण जानकारी देश के लाखों-करोड़ों गोप्रेमियों को प्रमाणिक रूप से संग्रहित होकर उपलब्ध हो सके, ऐसा प्रयास है। इस हेतु शीघ्र ही समग्र साहित्य जिसमें गो-लोक देवताओं, गो-परम्पराओं एवं गोसेवा व गोरक्षा सम्बन्धित समस्त विशेष ऐतिहासिक एवं वर्तमान के व्यक्तित्वों पर साहित्य सृजन किया जा रहा है।

उपरोक्त सम्बन्ध में शीघ्रातिशीघ्र पत्र, ईमेल या फेक्स द्वारा प्रमाणिक जानकारी प्रेषित करें। अपने आस-पास से और स्वयं के जीवन में गोरक्षा-गोसेवा सबन्धित श्रेष्ठ अनुभव एवं चमत्कारिक अनुभुतियाँ को भी भेजें। सम्पर्कः- 9414154706, टेली. फेक्स - 02979 -287122 ई मेल. k.k.p.pathmeda@gmail.com

संस्था समाचार

परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के अप्रेल माह के प्रवास का संक्षिप्त विवरणः-

बाड़मेर में गोरक्षा- गोसेवा के दृढ़ एवं दूरदर्शी निर्णयों के साथ गोसेवार्थ आयोजन सम्पन्न।

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज की प्रेरणा से बाड़मेर में गोसेवार्थ 1 से 3 अप्रैल तक ''नानी बाई का मायरा'' गोरक्षा, गोसेवा के नवसंकल्पों के साथ सम्पन्न हुआ।

2 अप्रैल को परम श्रद्धेय श्रीस्वामीजी महाराज के बाड़मेर पधारनेपर व्यासपीठसे परम पूज्य श्रीराधाकृष्णजी महाराज सहित उपस्थिति संतगणों एवं भक्त-भाविकोंने अभिनन्दन किया। पूज्यश्रीने अपने प्रवचनमें बाड़मेर क्षैत्रमें गोसेवा की आवश्यकताओंपर प्रकाश डालते हुए रचनात्मक विराट सौचके साथ गोसंरक्षण, गोपालन, गोसंवर्धन तथा पंचगव्य परिष्करण व विनियोग में पूरजोर लगने का आहवान किया।

2 अप्रैलको ही सांयकालमें गोऋषि स्वामीजीकी पावन निश्रा तथा परम गोवत्स बालव्यास श्रीराधाकृष्णजी महाराज एवं वरिष्ठ गोभक्त श्रीचम्पालालजी चौधरीकी उपस्थिति में बाड़मेर क्षेत्रमें निराश्रित-अनाश्रित गोवंशके संरक्षण, संवर्धन एवं गोपालनके सम्बन्ध में गोसेवक-गोभक्त कार्यकर्त्ताओं की बैठक एक अतिमहत्वपूर्ण बैठक हुई।

बैठकमें बाड़मेरके निकट ही निराश्रित-अनाश्रित वृद्ध, बीमार एवं दुर्घटनाग्रस्त गोवंशके सेवार्थ गोचिकित्सालय बनानेका निर्णय लिया गया। इस चिकित्सालयमें बाड़मेर शहरके सैंकड़ों गोसेवक-गोभक्त स्वयं प्रतिदिन प्रत्यक्ष सेवा देंगे, ऐसा बैठकमें संकल्प लिया गया। इस प्रकार 50 से 100 बीघा भूमिपर गोशाला निर्माण करनेकी घोषणा परम श्रद्धेय श्रीस्वामीजी महाराजके श्रीमुखसे हुई। इस गोशालामें क्षेत्र के निराश्रित गोवंशको संरक्षण दिया जायेगा। बैठकमें सुप्रसिद्ध गोसेवक-गोभक्त एवं गोधाम पथमेड़ाके वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्रीचम्पालालजी चौधारी ने गोसेवाके महत्व तथा मानव जीवनके सर्वोत्तम कल्याणमें गोमाताकी भूमिका पर मार्मिक एवं तथ्यात्मक प्रकाश डाला। उनके उद्‌बोधन एवं आहवान के पश्चात गोभक्तों द्वारा 100 बीघा भूमि दानकी घोषणाकर गोशाला निर्माणके संकल्पका मार्ग प्रशस्त किया।

परम गोवत्स बालव्यास श्रीराधाकृष्णजी महाराजने ''नानी बाईका मायरा'' में तीन दिन तक बाड़मेर वासियोंको भक्तिरसके सरोवरमें डूबकियाँ लगवाई तथा गोभक्ति गोसेवाके अनुपम संदेशको जन-जनके हृदयमें आत्मसात् करवाया।

6 अप्रेलको मोजरू गाँवके समस्त ग्रामवासियों ने श्रीस्वामीजी महाराजको गोउत्सवमें गोधाम पथमेड़ा द्वारा गुजरात में संचालित गोशालाओं हेतु गोग्रास राशि भेंट की।

8 अप्रेलको गोभक्ति एवं गोसेवाकी प्रेरणादायी फिल्म ''भक्त धन्नाजाट'' के गुलाबी नगरी जयपुरके राजमन्दिरमें हुए प्रिमियर शो में गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज पधारे। जयपुरमें दोपहर 2 बजे गोग्रास संकलन की ई.सी.एस योजना को मूर्त रूप देने हेतु वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं

के साथ विशेष बैठक हुई।

10 अप्रैलको गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज मलूकपीठ श्रीधाम वृन्दावनमें श्रीमलूक जयन्ति कार्यक्रममें पधारे। वहाँ पर गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज एवं मलूकपीठाधीश्वर परम पूज्य श्रीराजेन्द्रदासजी महाराजके सानिध्यमें आगामी दीपावलीके पश्चात गो-नवरात्र पर्व मनाने तथा परम पूज्य श्रीमुरारी बापूकी गोकथा के बारेमें विस्तारसे विचार-विमर्श हेतु वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की बैठक हुई।

11 अप्रैलको वृन्दावन से पधारते समय जयपुरमें अति विशिष्ट पंचगव्य आधारित प्रकल्प ''आयुर्वेद विश्वविद्यालय'' की स्थापना को लेकर वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की बैठकमें परम श्रद्धेय श्रीस्वामीजी महाराज ने मार्गदर्शन प्रदान किया।

14 अप्रैलको उदयपुरमें मेवाड़ के गोसेवक राजनेता स्व० श्रीसुरेन्द्रसिंह भण्डारीकी स्मृतिमें आयोजित कार्यक्रममें आशीर्वचन प्रदान किया। गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज का सैकड़ों गोसेवकों ने स्वागत किया। वरिष्ठ संघ परिवार सहित सनातन समाजकी विभिन्न संस्थाओंके वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थिति थे।

16 अप्रैलको सोमनाथ गोशाला, दीपड़ा (गुजरात) में भगवान श्रीराधाकृष्णजी की प्राण प्रतिष्ठा एवं गोशालाके वार्षिकोत्सवमें पधारे। हजारों भक्त-भाविकोंने गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराजका भावभरा अभिनन्दन किया तथा आशीर्वचन का लाभ लिया। उस दिन सांय को श्रीराजाराम गोशाला टेंटोड़ा के आगामी कार्यक्रम तथा गुजरातमें गोसंरक्षणके कार्योंको और अधिक गति देने हेतु वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओंके साथ बैठक हुई।

18 अप्रैलको ब्रह्मधाम आसोतरा पधारकर श्रीखेतेश्वर जन्मशताब्दी महामहोत्सव की तैयारियोंका अवलोकनकर कार्यकर्त्ताओं को मार्गदर्शन दिया।

21 अप्रैलको गुजरातकी औद्योगिक नगरी अहमदाबादमें पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पाद प्रा. लि.के पंचगव्य वितरण केन्द्रका उद्घाटन परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के पावन करकमलों से सम्पन्न हुआ।

23 अप्रैलको ब्रह्मधाम आसोतरामें श्रीखेतेश्वर जन्मशताब्दी महामहोत्सव आयोजन में पधारे। वहाँ हजारों जन-मानसने गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराजके दर्शन किये। ब्रह्माचार्य परम पूज्य श्रीतुलछारामजी महाराज के साथमें श्रीस्वामीजी महाराजने सम्पूर्ण कार्यक्रम स्थलकी परिक्रमा की। 29 अप्रैल तक आयोजित विभिन्न कार्यक्रमोंमें गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराजका विराजना रहेगा। इस दौरान यज्ञोपवित संस्कार शाला, ब्रह्मात्मक महायज्ञ, ब्रह्मर्षि श्रीखेतारामजी महाराजके श्रद्धांजलि कार्यक्रम, सत्संग सत्रमें श्रीस्वामीजी महाराज परम पूज्य श्रीतुलछारामजी महाराजके साथ भाग लेते हुए हजारों-लाखों भक्त-भाविक आशीर्वचन से धन्य-धन्य होगें।

गोधाम पथमेड़ा द्वारा आयोजित गोसेवार्थ कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण

नून (जालोर) में श्रीगोभागवत कथा, नरसीजी की हुंडी ।

4 से 10 मई, 2012 को नून (जालोर) में भागवत मर्मज्ञ प.पू. श्रीज्ञानानन्दजी महाराज के मुखारविन्द से ''श्रीगोभागवत कथा'' होगी। 8 मई को कथा के अतिरिक्त बालव्यास परम गोवत्स पूज्यश्री राधाकृष्णजी महाराज के श्रीमुख से''नरसीजी की हुंडी'' तथा ९ मई को ''मीरा चरित्र'' पर मारवाड़ी में कार्यक्रम होंगे।

समस्त ग्रामवासी नून (जालोर) द्वारा आयोजित कार्यक्रम ''श्री सुबेत्रा माताजी गोशाला

समिति, नून'' परिसर में होंगे। पूरे आयोजनमें गोसेवकोंको परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामीजी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज का पावन सानिध्य एवं आशीवर्चन का लाभ मिलेगा।

11 से 13 मई भीलवाड़ा में ''नानी बाई रो मायरो''

बालव्यास प.पू. श्रीराधाकृष्णजी महाराज की मधुर वाणी से ''गोभक्त परिवार, पथमेड़ा गोशाला शाखा-भीलवाड़ा'' द्वारा 11 से 13 मई 2012 को ''नाई बाईरो मायरो'' कार्यक्रमका आयोजन रखा गया है। प्रतिदिन सांयकालीन भजनसंध्या तथा अन्तिम दिन ''मीरा चरित्र'' का आयोजन भी रहेगा। कार्यक्रम आयोजन स्थल श्री अग्रवाल उत्सव भवन, रोड़वेज बस स्टेण्डके सामने, भीलवाड़ा रखा गया है।

गुजरात गो भक्ति महोत्सव

श्री राजाराम गोशाला आश्रम टेंटोड़ा के तेरहवें स्थापना वर्ष के उपलक्ष में 18 से 20 मई, 2012 को टेंटोड़ा (गुज.) में गुजरात गो भक्ति महोत्सव होगा। प्रोग्राम के दौरान गोविषयक संगोष्ठियाँ एवं गोपुष्टि महायज्ञ का आयोजन होगा। इस आयोजन में परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामीजी महाराज का सान्निध्य रहेगा।

गोभक्ति महोत्सव-पूना

परम गोवत्स राधाकृष्णजी महाराज के श्रीमुख 1 से 3 जून तक ''गोभक्ति महोत्सव'' का पूनामें आयोजन रखा गया है। इस आयोजनमें नन्दोत्सव, गोचारणलीला, गोरस उत्सव आदि प्रोग्राम रहेंगे।

श्री मनोरमा गोलोक महातीर्थ, नंदगांव में 20 से 24 जून, 2011 तक पाँच दिन की आवासीय ''गो-वत्स पाठशाला'' का आयोजन

लगातार तीसरे वर्ष देश के युवाओं को सीधे गोसेवा से जोड़नेके अभिनव प्रयोग तथा भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओंमें गोमाताकी महत्ता, उपादेयता एवं आवश्यकता को व्यवहारिक दृष्टिकोण के और अधिक नजदीक लाने हेतु ''गोवत्स पाठशाला'' का दिव्य आयोजन ''श्री मनोरमा गोलोक महातीर्थ, नंदगांव'' में परम भागवत गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानंदजी महाराज के पावन सानिध्य एवं बालव्यास प.पू. श्रीराधाकृष्णजी महाराज के दिशा-निर्देश एवं प्रयासों से आयोजित होने जा रहा है।

''गोवत्स पाठशाला'' के दौरान गोसंरक्षण, गोपालन, पंचगव्यों के उत्पादन एवं विनियोग की पौराणिक एवं आधुनिक पद्धतियों के व्यावहारिक और बौद्धिक दोनों स्वरूपों पर आधारित दिनचर्या रहेगी। साथ ही योग, ध्यान, गोसेवा कार्य, गोशालाओंका भ्रमण, सत्संग व संगोष्ठियों आदि का भी प्रतिदिन आयोजन होता रहेगा।

''गो-वत्स पाठशाला'' का आयोजन स्थलः-
श्रीमनोरमा गोलोक महातीर्थ, नंदगांव,
त. रेवदर जिला- सिरोही (राज.)

विशेष नोटः- अहमदाबाद व जोधपुर हवाई अड्डों से दूरी 250 कि०मी० तथा आबूरोड़, रानीवाड़ा तक रेल सेवा के बाद निम्बज, वड़वज व रेवदर से होते हुए बस सेवा उपलब्ध है। अधिक जानकारी के लिए गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा सम्पर्क करें।

कविता

गायों के हित जो जीता है
गायों के हित जो मरता है !
उसका हर शब्द रामायण
और
हर कर्म उसका गीता है !!

सच्ची घटना

गोमाता की ममता

एक गोसेवक

एक बार की बात है इन्दौर नगरके किसी मार्गके किनारे एक गाय अपने बछड़ेके साथ खड़ी थी, तभी रानी अहिल्याबाई के पुत्र मालोजीराव अपने रथपर सवार होकर गुजर रह थे। मालोजीराव बचपनसे ही बेहद शरारती व उच्छृंखल प्रवृत्ति के थे। राह चलते लोगोंको परेशान करनेमें उन्हें विशेष आनंद आता था। गायका बछड़ा अकस्मात उछलकर उनके रथके सामने आ गया। गाय भी उसके पीछे दौड़ी पर तब तक मालोजीका रथ बछड़ेके ऊपरसे निकल चुका था। रथ अपने पहियेसे बछड़ेको कुचलता हुआ आगे निकल गया था। गाय बहुत देर तक अपने पुत्रकी मृत्युपर शोक मनाती रही। तत्पश्चात उठकर देवी अहिल्याबाईके दरबारके बाहर टंगे उस घण्टेके पा जा पहुँची, जिसे अहिल्याबाईने प्राचीन राजपरम्पराके अनुसार त्वरित न्याय हेतु विशेष रूपसे लगवाया था। अर्थात जिसे भी न्यायकी जरूरत होती, वह जाकर उस घन्टेंको बजा देता था। उसके बाद तुरन्त दरबार लगता तुरन्त न्याय मिलता। घन्टें की आवाज सुनकर देवी अहिल्याबाईने ऊपरसे एक विचित्र दृश्य देखा कि एक गाय न्यायका घन्टा बजा रही है। देवीने तुरन्त प्रहरीको आदेश दिया कि गायके मालिक को दरबारमें हाजिर किया जाये। कुछ देर बाद गायका मालिक हाथ जोड़कर दरबारमें खड़ा था। देवी अहिल्याबाईने उससे कहा कि- ''आज तुम्हारी गायने स्वंय आकर न्यायकी गुहार की है । जरूर तुम गो माताको समयपर चारा पानी नहीं देते होगें।'' उस व्यक्तिने हाथ जोड़कर कहा कि मातेश्री ऐसी कोई बात नहीं है। गोमाता अन्यायकी शिकार तो हुई है, परन्तु उसका कारण मैं नहीं कोई और है, उनका नाम बतानेमें मुझे प्राणोंका भय है। देवी अहिल्या ने कहा कि ''अपराधी जो कोई भी है उसका नाम निडर होकर बताओ, तुम्हें हम अभयदान देते हैं।'' तब उस व्यक्तिने पूरी वस्तुस्थिति कह सुनायी। अपने पुत्रको अपराधी जानकर देवी अहिल्याबाई तनिक भी विचलीत नहीं हुई और फिर गोमाता स्वयं उनके दरबारमें न्यायकी गुहार लगाने आयी थी। उन्होंने तुरन्त मालोजीकी पत्नी मेनाबाईको दरबारमें बुलाया और पूछा-''यदि कोई व्यक्ति किसी माताके पुत्रकी हत्या कर दे, तो उसे क्या दण्ड मिलना चाहिए?'' मालोजीकी पत्नीने कहा कि ''जिस प्रकारसे हत्या हुई, उसी प्रकार उसे भी प्राण-दण्ड मिलना चाहिए।'' देवी अहिल्याने तुरन्त मालोजी रावको प्राण-दण्ड सुनाते हुए उन्हें उसी स्थान पर हाथ-पैर बाँध ाकर उसी अवस्थामें मार्गपर डाल दिया गया। रथके सारथीको देवीने आदेश दिया, पर सारथीने हाथ जोड़कर कहा ''मातेश्री, मालोजी राजकुलके गोमाता रथ के सामने आ खड़ी हो गयी। सारा जन समुदाय गोमाता और उनके ममत्व की जय जयकार कर उठा। देवी अहिल्या की आँखोंसे भी अश्रुधारा बह निकलीं। गोमाताने स्वयंका पुत्र खोकर भी उसके हत्यारेके प्राण ममताके वशीभूत होकर बचाये। जिस स्थानपर गोमाता आड़ी खड़ी हुई थी, वही स्थान आज इन्दौरमें (राजबाड़ा के पास) ''आड़ा बाजार'' के नाम से जाना जाता है।

आज की सरकार और उस समयके राजाके चरित्रों में कितना अन्तर आ चुका है !

व्रत-पर्वोत्सव

सांस्कृतिक इकाई के मूल-पर्व एवं त्योहार

किसी मानव-समूह अथवा देश की सांस्कृतिक एकता का निर्माण वहाँ के मूल्यों, आदर्शों, प्रेरक सिद्धान्तों एवं प्रेरक मान्यताओं से होता है। ये जितने सुदृढ़, व्यापक, उदार एवं चैतन्य होंगे, उस देश अथवा मानव-समूह की सांस्कृतिक एकता भी उतनी ही सुदृढ़, स्थिर एवं अविचल होगी।

इस दृष्टि से उत्सव, त्यौहार एवं व्रत संस्कृति के आवश्यक अंग-उपाअंग हैं। ये तत्त्व मनुष्य के जीवन-व्यवहार के केन्द्र-बिन्दु में रहते हैं। इन्हीं केन्द्र-बिन्दुओं के चारों ओर भावनाओं, विश्वासों, विचारों एवं धार्मिक व्यवहारों का विस्तार होता है और मनुष्य समूहरूप में स्वतः ही मन एवं आत्मा की एकता के सूत्र में बँधने लगता है। यह संस्कृति ही मनुष्य को व्यष्टि इकाई की सीमित परिधि से हटाकर सामूहिक अथवा समष्टि सम्पन्न बनाती है।

भारतीय संस्कृति का मुख्य तत्त्व उसकी धार्मिक परम्परा है। इस परम्परा का इतिहास बहुत पुराना है। ऋग्वेद के पृथ्वीसूक्त के अनुसार यह हमारी मातृभूमि अनेक प्रकार के जनको धरण करती है। ये जन अनेक प्रकार की भाषाएँ बोलते हैं और नाना प्रकार के धर्मों को मानते हैं, किंतु भारतवर्ष की अन्तरात्मा लोक की इस विविधता के मूल में छिपी एकता के तत्त्वों को खोजा जो हमारे देश की सांस्कृतिक एकता को आज भी थामे हुए हैं। समन्वयात्मक दृष्टिकोण एक ऐसा ही तत्त्व है, जो भारतीय संस्कृति की आत्मा है।

धार्मिक परम्परा में हमारे व्रत और त्यौहार हैं। हिमाचल से लेकर दक्षिण प्रदेश तक और बंगाल से लेकर गुजरात तक व्रतों और त्यौहारों की एक अविच्छिन्न परम्परा आज भी देश में विद्यमान है जो पूरे वर्ष चलती रहती है। देवी-देवताओं में अटुट विश्वास चाहे वे वैदिक देवता हों अथवा लौकिक, भारतीय लोक की विशेषता रही है। भारत के किसी भी प्रदेश में चले जायँ वहाँ प्रतिवर्ष समय-समय पर किसी-न-किसी देवी-देवता के मेले जुड़ते हैं और उत्सव होता है। लोकदेवताओं के प्रति जनका जो अटूट विश्वास है, उसे व्रत या आस्था कहा गया है। जब देवी-देवताओं के प्रति इस प्रकार की भक्तिभावना का प्रदर्शन उत्कण्ठा, उमग एवं उत्साह के साथ होता है तो इसे त्योहार अथवा उत्सव कहते हैं। इस प्रकार के सैकड़ों व्रत एवं त्योहार हमारे देश में मनाये जाते हैं।

विक्रम संवत् के प्रथम मास चैत्र से प्रारम्भ कीजिये- गणगौरव्रत, शीतला सप्तमी, नवरात्र, दुर्गापूजा, रामनवमी, गंगादशहरा, नागपंचमी, रक्षाबन्धन, कृष्ण-जन्माष्टमी, अनन्त चतुर्दशी, श्राद्धपक्ष, विजयादशमी अथवा दशहरा, शरदपूर्णिमा, करवाचौथ, धनतेरस, दीपावली, अन्नकूट, गोपाष्टमी, कार्तिक-पूर्णिमा, संकटचौथ, मकर-संक्रान्ति, वसन्तपंचमी, महाशिवरात्रि एवं वर्ष के अन्तिम मास फाल्गुन में होलिकोत्सव तक भारतीय व्रत और त्यौहारों का यह सिलसिला फैला हुआ है। ये सब तो बड़े-बड़े व्रत और त्यौहार हैं, जिन्हें गाँव-गाँव एवं नगर-नगर में सामूहिक रूप से मनाया जाता है। इनके अतिरिक्त एकादशी, अमावास्या, पूर्णिमा, अष्टमी आदि के व्रत होते हैं, जो किसी न किसी ध ार्मिक आस्था से जुड़े रहते हैं। इसी प्रकार

शेष भाग पुष्ठ २८ पर

गोशाला

साभारः गोशाला

(पंचखण्ड पीठाधीश्वर प. पू. आचार्य श्री धर्मेन्द्रजी महाराज)

(२३२)

लकुटी कामरिया पर जिनने
जग न्यौछावर कर डाला
आठों सिद्धि नवों निधियों को
गो पर अहो ! लुटा डाला
वे रसखान तभी आएँगे
गोभक्तों ! फिर भारत में
ग्राम-ग्राम घर-घर में जिस दिन खुल जाएँगी
गोशाला.

(२३३)

गायें पूरब गायें पच्छिम
पूरब-पच्छिम पय-प्याला
इधर-उधर गोरस की नदियाँ
गोप और गोपी -बाला
टूटेंगी नकली दीवारें
देश स्वयं जुड़ जाएगा
ग्राम-ग्राम घर-घर में जिस दिन खुल जाएँगी
गोशाला

(२३४)

क्या आएँगे स्वर्ग त्याग कर
देव यहाँ पीने हाला ?
क्या आएँगे प्रभु भारत में
पीने को टी का प्याला ?
सभी सिद्धियाँ स्वयं सिमटकर
भारत में बस जाएँगी
ग्राम-ग्राम घर-घर में जिस दिन खुल जाएँगी
गोशाला

(२३५)

बड़े-बड़े यत्नों से जिसको
मेरे पुरखों ने पाला
जिसकी रक्षा के सुयज्ञ में
हवि निज प्राणों का डाला
उसके गौरव की रक्षा का
तुम दायित्व निभाओगे
यही सोच कर पुत्र ! तुम्हें यह सौंप रहा हूँ
गोशाला

(२३६)

मंगलमय गोपाल कृष्ण गो
मंगलमय गो-पय-प्याला
गोरस गोरोचन मंगलमय
मंगलमयि गोपी -बाला
मंगलमय गो-संवर्द्धन में
अखिल विश्व का मंगल हो
सारा जग होगा मंगलमय जब मंदिर मंदिर
गोशाला.

(२३७)

गत गौरव -गाथा -गायन से
काम नहीं चलने वाला
कब तक पुरखों की पूँजी से
कहो रूकेगा दीवाला ?
बोल-बोल कर गोमाता की
जय कब तक बहलाओगे
माँग रही है बलि प्राणों की आज तुम्हारी
गोशाला

मासिक पत्रिका ''कामधेनु—कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक स्वामी ज्ञानानन्द द्वारा सुभद्रा प्रिंटिंग प्रेस, विश्नोई धर्मशाला के पास, साँचौर (जालोर) से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, पोस्ट—हाड़ेतर, तहसील—सांचौर, जिला—जालोर (राजस्थान) से प्रकाशित।

श्रीगोधाम पथमेड़ा द्वारा स्थापित, संचालित एवं प्रेरित गोशाला आश्रमों में संरक्षित गोवंश की संख्या

(1.)वृद्ध तथा कमजोर गायें - 37481 (2.) बीमार एवं विकलांग गायें -11416 (3.)नाकार एवं कमजोर नंदी 10122
(4.) बीमार एवं विकलांग नंदी - 11195 (5.) छोटे वृषभ - 9646 (6.) स्वस्थ गायें, बैल एवं नंदी - 18967
(7.) छोटे बड़े बछड़े-बछड़ियाँ - 23633 तथा , वर्तमान में सभी शाखाओं में कुल गोवंश की संख्याः-122450 है।

विशेष नोटः- उपरोक्त लगभग १ लाख से अधिक अनाश्रित-निराश्रित गोवंश के अतिरिक्त पिछले वर्षों में अकाल से पीड़ित लाखों निराश्रित गोवंश की भी प्रदेश के विभिन्न भागों में आपात गोसंरक्षण केन्द्र खोलकर सेवा-सुश्रुषा जारी रही।

बीते वर्ष अच्छे मानसून के चलते संतवृंदों के आह्वान पर राज्यभर में शिविरों व गोशालाओं से स्वस्थ, गर्भस्थ एवं दुधारू गोवंश को सीधे किसानों को बड़ी संख्या में वितरित भी किया गया। परन्तु वर्तमान में फिर से एक बार अकाल वर्षों की ही भाँति घास-चारा की मँहगाई एवं अनुपलब्धता का सामना पूरे प्रदेश में तथा विशेषकर गोधाम पथमेड़ा संचालित गोशालाओं को करना पड़ रहा है। अतः समय से पूर्व ही अकाल जैसी हो चुकी परिस्थितियों से विवश गोपालक अनुपयोगी गोवंश को निराश्रित छोड़ रहे हैं। फलतः गोशालाओं में लगातार गोवंश बढ़ता जा रहा है और भूख-प्यास एवं कसाईयों के क्रूर हाथों से बचाने का कार्य भी प्रदेशभर में युद्ध स्तर पर जारी रखना आवश्यक है। जबकि पिछले दो वर्ष से सरकार से किसी भी प्रकार का गोशालाओं को अनुदान व सहयोग नहीं मिल रहा है। अतः विनम्र आग्रह है कि समस्त गोभक्त-गोसेवक तत्काल अधिकाधिक सहयोग के साथ आगे आवें।

-: कार्यालय एवं कार्यकत्ताओं के सम्पर्क सूत्र :-

केन्द्रीय कार्यालय पथमेड़ा (02979) 287102,09 फैक्स 287122 मो. 7742093168, 9414131008, 9413373168, 9414152163
श्री मनोरमा गोलोक महातीर्थ, नंदगांव 9460717101, टे.फै. 02975-287343, 7742093200, 8003392291
दक्षिणांचल कार्या. बैंगलोर 08022343108 9449052168, 09829101008,09483520101
पश्चिमांचल मुख्यालय मुम्बई 02266393598,9702041008, 9969465325,9920871008
भायन्दर 9819772061,9029519779, 9324525247,9920871008
पूना 9372220347,9326960169,9029519779,9920871008
गोवा 7709587648, 9029519779, 9920871008
सूरत 9825130640, 9909914721, 9374538576, 9825572768, 9426106315, 0261.2369777
वापी 9427127906, 0260-2427475
चैन्नई 9884173998,9952077188,944057448,9445165901,9380570040
हैदराबाद 9030909090, 9849011776
अहमदाबाद 9426008540,9427320969,9824444049,9925019721,9374541460(079)25320652,
पंजाब 9814036249, 9417155533, 9815468646, 9417380950,9417601223
दिल्ली 9811284207, 9312227141, 9811985292, 09313550444, 9810027501
कोलकत्ता 9903016181, 9339355679
जोधपुर 9414145448,9414136210, 9414849721, 9929512000
अंकलेश्वर 9909946972, 9427101391,9825323694
जयपुर 0141-2299090,9929231144,9829067010, 9001000300, 9413369945
हरियाणा 9416050318, 9812019003,9812307929, 9829598216
रायपुर (छ.) 9425515915, 0771.2228068
भीलवाड़ा 9829045270, 9414113284,9413357589
बालोतरा 02988-223873,9413503100, 9460889930
बनासकांठा 9426408451,9979565700,9898869898,9427044445,9924941000
बाड़मेर 9413308582, 9414106528, 9414106331, 9928263311

अधिकाधिक गोभक्त मासिक ''कामधेनु-कल्याण'' के 10 वर्षीय आजीवन सदस्य बने। सदस्यता राशि 1100 रूपये का ड्राफ्ट ''कामधेनु प्रकाशन समिति'' के नाम से सम्पादकीय पते पर अथवा बी.ओ.बी शाखा सांचोर में ऑनलाईन खाता संख्या 29450100000326 में भेंजे।

RNI NO. RAJHIN/06/17167 POST REGD NO.RJ/SRO/9638/2012-2014

श्री गोभक्ति महोत्सव पुना

नन्दोत्सव दिनांक 1 से 3 जून, 2012 गोरस उत्सव

गोचारण लीला उत्सव

गोवत्स पाठशाला – 2012

दिनांक 20
से
24 जून, 2012

आयोजन स्थल
मनोरमा गोलोक तीर्थ नन्दगांव
केसुआ, तह. रेवदर जि. सिरोही (राज.)

ः अनाश्रित एवं निराश्रित गोवंश हेतु सहयोग के प्रकारः

1.एक बछड़ा-बछड़ी प्रतिवर्ष	-7200 रूपये
2.एक गाय का प्रतिवर्ष	-11,000 रूपये
3.एक हरे चारे की गाड़ी	-31,000 रूपये
4.एक सुखे चारे की गाड़ी	-51,000 रूपये
5.अक्षय भूमि दान हेतु	-50,000 रूपये
6.एक दिन का गोभंडारा	-2,50,000रूपये
7.एक दिन का हरा एवं सूखा चारा	-18,00,000 रूपये

. अपने परिवार में जन्मादि उत्सव, व्रत-उपवास के दिन की बचत एवं अपने प्रतिष्ठान की आय में से सामर्थ्य, क्षमता एवं इच्छानुसार सहयोग करें।

सहयोग को आप सीधे ही निम्न में से किसी भी बैंक में ऑन लाईन जमा करवा सकते है।

Account Name
Shree Gopal Govardhan Goshala, Pathmeda

Bank's Name	: Account No
बैंक ऑफ बड़ौदा Bank of Baroda India's International Bank	29450100007739
भारतीय स्टेट बैंक State Bank of India With you- all the way Pure Banking. Nothing else.	31187795707
स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर State Bank of Bikaner and Jaipur The Bank with a vision	51055523971